।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष-17 | अंक-18 | पौष कृ. 11 से पौष शु. 9 सं. 2075 वि. | 01-15 जनवरी 2019 | अमरोहा, उ.प्र. | पृष्ठ-16 | प्रति-5/-

धूमधाम से हुआ उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में मंच पर विराजमान अतिथिगण- केसरी

अशोक आर्य
उदयपुर (राजस्थान)।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान में गुलाब बाग, नवलखा महल, उदयपुर में 6, 7 व 8 अक्टूबर को 21वां त्रिदिवसीय सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों श्रद्धालु आर्यजन सम्मिलित हुए।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में डॉ0 सोमदेव शास्त्री (मुंबई) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न यज्ञ में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे सिक्किम के राज्यपाल महामहिम गंगा प्रसाद जी पहले दिन यजमान बने। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता है।

मुख्य अतिथि श्री गंगा प्रसाद ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने न केवल राजाओं बल्कि आम लोगों को भी अपने उपदेशों से लाभान्वित किया जिससे गोविन्द गुरु जैसे अनेकों समाज सुधारकों को एक नई दिशा एवं ऊर्जा प्राप्त हुई। स्वामी जी ने तत्कालीन महारानी विक्टोरिया को गोवध पर प्रतिबंध लगाने हेतु हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से अधिनियम बनाने के लिए कहा। इसका उल्लेख उन्होंने अपने लघु ग्रन्थ गोकरुणानिधि में किया है। उनके द्वारा गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में लिखित सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता के रूप में हमारा मार्गदर्शन करता है। इसमें मनुष्य मात्र को अपने कर्तव्य, अकर्तव्य, धर्म-अधर्म, भक्ष्य-अभक्ष्य का सम्यक बोध होता है।

समारोह अध्यक्ष सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने आर्य जनता का आह्वान किया कि वह ग्रामीण क्षेत्रों व आम जनता तक महर्षि दयानन्द का संदेश पहुंचाने का कार्य करें।

इस अवसर पर इन्द्रदेव पियूष के मधुर भजन हुए। भूपेन्द्र शर्मा ने कुशल संचालन किया।

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आर्येशानन्द ने की। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश महर्षि की विश्व को अनूठी देन है, लेकिन इसके प्रचार-प्रसार के लिए हमें स्थाई प्रचारक तैयार करने होंगे व उन्हें सवेतन, सम्मानपूर्वक हर जिले में स्थापित भी करना होगा।

महोत्सव में संसद सदस्य स्वामी सुमेधानन्द ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार करके ही हम

शेष अन्तिम पृष्ठ पर...

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

– डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (9412139333)

हिंदी भाषा और इसकी अतुल्य सम्पदा

सुमित अग्रवाल

हिन्दी भाषा भारत में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इस राष्ट्र के उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, दिल्ली, उत्तराखण्ड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान मूल रूप से हिंदीभाषा क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। इसकी सर्वव्यापकता के कारण ही इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इसके पीछे कारण यह है कि 13-14 सितम्बर 1949 को भारत की संविधान सभा में संघ की भाषा पर बहस हुई और 14 सितम्बर को सभी ने हिन्दी को राजकीय यानी सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का निर्णय लिया।

संविधान के अनु0 343 के खण्ड-1 में लिखा है कि हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी, किंतु उसी अनु0 के खण्ड-2 में लिखा है कि खण्ड-1 में कही बात के होते हुए भी इस संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्षों तक भारत संघ का समस्त सरकारी कामकाज पूर्व की भांति अंग्रेजी में होता रहेगा।

संविधान लागू होने के 15 वर्ष पूरे होने पर सन् 1965 में जब केन्द्र सरकार ने अंग्रेजी को राजभाषा बनाने का विधेयक संसद में रखा, तो डॉ0 राममनोहर लोहिया ने लोकसभा में न सिर्फ इसका जबरदस्त विराधा किया, बल्कि युवा पीढ़ी से इसके खिलाफ आन्दोलन का आह्वान भी किया।

भारत की अपनी भाषा हिन्दी को भले ही महत्व न दिया जाता हो, और अंग्रेजी को सिरमौर समझा जाता हो, लेकिन अन्य देश इस तरह अपनी भाषा की अवमानना नहीं करतें उदाहरण के लिए 337 उपबोलियां और 52 मुख्य बोलियों वाले बहुभाषी अमेरिका के कुछ राज्यों में अब तक अंग्रेजी को राजकाज या ऑफिसियल भाषा नहीं बनाया है। न्यू मैक्सिको, अर्कन्सॉस, सेन एन्टोनियो इत्यादि कुछ राज्यों में अभी भी क्षेत्रीय भाषा को ही कामकाज की भाषा का अधिकार है।

इसी तरह सभी यूरोपियन देशों, अनेक अफ्रीकी देशों, संपूर्ण दक्षिण अमेरिका एवं अनेक ओशियानिक देशों में अंग्रेजी लगभग न के बराबर बोली जाती है। जापान, चीन, कोरिया आदि बहुत से देश ऐसे हैं, जो अपनी भाषा के जरिए ही यूरोप व अमेरिका से कहीं अधिक विकसित हैं।

आज हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी भाषा के रूप में उभरकर आई है और यह तेजी से बिजनेस की ग्लोबल बोली बन रही है। इस तरह नई पीढ़ी की हिंदी भाषा अंग्रेजी और उर्दू की शब्द-संपदा को अपने में समेटे व सहेजे हुए है, जो गांव से लेकर गूगल तक की भाषा बन गयी है और इसे युवा उद्यमी अपने तकनीक के तारों से गूंथ रहे हैं।

गूगल समेत कई सर्वेक्षणों से एक बात प्रमुखता से उभर कर सामने आयी है कि इंटरनेट यूजर्स की अगली जमात ग्रामीण भारत से होगी और इसके लिए अंग्रेजी में इंटरनेट उपलब्ध कराने वाली इंटरनेट कम्पनियों को हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में काम करने के बारे में सोचना पड़ेगा।

मानवता का प्रथम गुण उदारता है, और हिन्दी उदारता की भाषा है। उसने अपने यहां अपनत्व के प्रत्येक भाव व शब्द की सम्पदा को सम्मान सहित वरण किया है। 'अतिथि शब्दों' को आत्मसात् करने की तथा परम उदारता की बात निःस्वार्थ भाव से विश्व की कोई भी भाषा हिन्दी से सीखे।

हिन्दी की अपनी शब्द-निधि भी अपने आप में कम नहीं है। जहां अन्य भाषाओं से शब्द संपदा ग्रहण करने में हिन्दी सबसे आगे है, वहीं संस्कृत से कितने ही शब्द यह ले सकती है। संस्कृत का प्रत्येक शब्द हिन्दी की प्रकृति से मेल खाता है और अकेली संस्कृत में लगभग दो हजार धातु हैं। एक धातु में दस प्रत्यय, तीन पुरुष, तीन वचन, तीन लिंग, सात विभक्तियां, और बीस उपसर्ग आदि लगाकर इन्हें शब्द बनाना शुरु करें, तो लगभग ग्यारह लाख शब्द बनते हैं। एक धातु से ग्यारह लाख तो दो हजार धातुओं से कितने शब्द बन सकते हैं? लाखों नहीं, करोड़ों शब्द।

-श्री रामस्वरूप सिंह महाविद्यालय
लडनपुर, धनौरा
जिला- अमरोहा (उ0प्र0)
मोबा0 : 8923285659

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) में

बोधोत्सव का भव्य आयोजन

आर्यजनों को जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, से मंगलवार अर्थात् 3 से 5 मार्च 2019 तक किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। **-रामनाथ सहगल, मंत्री**

मदरसा बना - वैदिक गुरुकुल

गुरुकुल के संस्थापक आचार्य प्रणव मिश्र– केसरी

परमपिता परमात्मा की कृपा तथा ऋषि दयानन्द जी के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा से मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के उपरांत भी आचार्य प्रणव जी मिश्र (पूर्वनाम- मुख्तार अजीम), निवासी पुरागवां, जनपद- बदायूं (उ0प्र0), प्रबन्धक वेदभारती संस्कारशाला (गुरुकुल) अपने पूर्व जीवन में एक मदरसा इस्लामिया लोसुल कादरिया का अपने ग्राम में संचालन करते थे। उपरोक्त मदरसे क स्थापना 27 अप्रैल 1992 में आपने की थी। आपने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की। आप विद्यालय की स्थापना के इच्छुक थे, किंतु कट्टरवादियों के बहकावे में आकर आपने मदरसा स्थापित कर दिया। आप अपने पड़ोस में रहने वाले ऋषिभक्त देवीराम आर्य के सम्पर्क में थे। उनके मुंह से आपने सुना था कि कुरान और पुराण एक ही गुरु के चेले हैं। आपके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि देवीराम आर्य जी की बातों के सामने सभी लोग निरुत्तर हो जाते हैं तो वह कौनसी पुस्तक है, जिसको पढ़कर देवीराम जी इतने ज्ञानी हैं। क्यों न हम उस पुस्तक को पढ़कर हम इनकी बातों का जवाब दें। एक दिन जब आर्य जी सो रहे थे, उनकी खटिया पर रखा सत्यार्थ प्रकाश हमने उठा लिया और उसे पढ़ा।

बदायूं की समस्त दुकानों पर तीन दिन तक सत्यार्थप्रकाश खोजा, उसके पश्चात् नन्थाराम बुक डिपो से प्राप्त हुई। तब आपने उसके कवर पृष्ठ निकाल दिये, जिससे किसी को पता न चले कि आप कौनसी पुस्तक पढ़ रहे हैं। आप सत्यार्थ प्रकाश रात्रि को दीपक के प्रकाश में पढ़ते थे।

सत्यार्थ प्रकाश से आपके अन्दर क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ और आप 27 जून 2004 को गुरुकुल खेड़ा के आचार्य राजसिंह जी के पौरोहित्य में धर्मपत्नी तथा पांच सन्तानों सहित शुद्धि करवाकर वैदिकधर्मी बन गये। उसी समय आपने मदरसे का नाम बदलकर नेताजी सुभाष आदर्श विद्यालय रखा, जिसका नाम संशोधित कर वर्ष 2010 में वेदभारती समिति पंजीकृत करवाकर वेद भारतीय संस्कारशाला गुरुकुल अपने स्वयं के खेत में स्थापित की तथा जमीन का नामांकरण भी समिति के नाम से करवा दिया। शुद्धि के पश्चात् आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित संस्कारों के अनुकूल प्रकाश देव को जन्म दिया।

आपके तीनों सुपुत्रों ने गुरुकुलों में अध्ययन कर शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। सभी बच्चों की शिक्षा गुरुकुल में हुई। आप सात वर्षों से दैनिक अग्निहोत्री हैं। यज्ञ पश्चात् ही भोजन ग्रहण करते हैं। पिता जी शुरु में विरोधी रहे, किंतु बाद में स्वयं घोषणा कर लक्ष्मीनारायण बन गये। वानप्रस्थ लेकर अंतिम सांस तक वैदिकधर्मी रहे। आपसे अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार पर प्रत्यक्ष भेंट होने पर वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा ने यह साक्षात्कार प्राप्त किया।

आपका ग्राम मुस्लिम बहुल तथा अभावग्रस्त क्षेत्र है। आप अत्यंत बुद्धित्ता तथा जीवटता की प्रतिमूर्ति हैं कि आपने जिस मत में जन्म लिया, उसे त्यागा ही नहीं वरन् वैदिक धर्म को अंगीकार करने के पश्चात् अपने बच्चों को गुरुकुली शिक्षा प्रदान की तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आप अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आर्यजनों से अनुरोध है कि आचार्य जी द्वारा संचालित गुरुकुल में मुक्तहस्त से सहयोग प्रदान करें। इनका पता है-

आचार्य प्रणव मिश्र आर्य
प्रबन्धक, वेद भारती
संस्कारशाला गुरुकुल,
पुसगवां, जिला- बदायूं (उ.प्र.)
मोबा. : 7248245000
(साभार...)

वैचारिक प्रवाह

श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया कायमगंज, फर्रुखाबाद (उ0प्र0)

रावण के विनाश को समझें

हमारे देश में विजयदशमी पर्व मनाया जाता है। उस दिन रावण के पुतले जलाकर खुशी मानते हैं, किंतु चौदह दिन से बड़े रामजी रामलीला में नहीं होते हैं और स्वयं में कोई राम नहीं बनना चाहता। इसीलिए लीला मात्र करने से रावण नहीं मरता है। यदि वास्तविक रूप से रावण दहन कर दिया जाए, तो हर वर्ष रामलीला की आवश्यकता नहीं होगी। सत्यमेव जयते संविधान में लिखा है, किंतु सत्य की परिभाषा के बिना असत्य बढ़ रहा है और परिणाम स्वरूप सुप्रीम कोर्ट तक मुकदमे चल रहे हैं तथा निपटारा 10 प्रतिशत का भी नहीं होता है। क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में न्याय की परिभाषा ही नहीं है, जिससे अन्याय बढ़कर अशान्ति होती है। तभी रामलीला में लाखों दर्शकों के सामने सीताहरण होता है और दर्शक प्रसन्न होते हैं। अतः रामलीला के चन्दे से राम को तैयार करें, तभी सत्य की विजय होना संभव है।

अज्ञान हटाएं, ज्ञान बढ़ाएं, मुक्ति पाएं

अज्ञानवश लोग लक्ष्मी-गणेश की जगह पर खिलौनों की पूजा करके प्रतिवर्ष बदल भी देते हैं, जो सारे संसार की शोभाओं को बनाता है, उसे लक्ष्मी और जो सबका एक साथ स्वामी होते हुए उसकी गणना रखता है, उसी को गणेश कहते हैं। ये सब ईश्वर के नाम हैं। कुछ लोगों ने लक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया, और गणेश का वाहन चूहा बताया है। इसमें उल्लू का संकेत भी हम लोगों की तरफ है, क्योंकि थैले को लटकाए हुए हमीं लोग घूमते हैं और चूहों की तरह काटते हैं। इसलिए उल्लू बनकर काटने की जरूरत नहीं है। एक दिन पूर्व जो यम का दीपक भी जलता है, वह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का संकेत है और धनतेरस से भी तात्पर्य स्वास्थ्य की रक्षा करें, जैसा कि चरक ने आयुर्वेद बनाया और धनवन्तरि की पूजा की। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार पटाखे न जलाएं, तभी पर्यावण सुरक्षा होगी। जुआ, शराब बन्द करते हुए जीवन सुरक्षित बनाएं।

'या देवी सर्वभूतेषु' नवदुर्गा की वास्तविकता

जो परमात्मा सारे संसार में व्यापक है। रामचरित मानस में भी लिखा है- 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना'। वेद में 'ओ3म् खम् ब्रह्म' से तात्पर्य है जो आकाशवत् व्याप्त होवे। इस्लाम की मान्यता के अनुसार खुदा कण-कण में विराजमान है तथा अंग्रेजी में सृष्टि की रचना, पालन, व प्रलय करने वाले को गॉड कहते हैं। नवदुर्गा से तात्पर्य- इस शरीर का नाम दुर्ग है, और इसमें जो जीव रहता है, उसे दुर्गा कहते हैं। इसमें नौ प्रकार के विघ्न पाये जाते हैं, जिसको योगाभ्यास द्वारा दूर करना ही नवदुर्गा व्रत कहलाता है। व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अतिरति, भ्रान्तिदर्शन, अलब्ध भूमिकत्व, अनवस्थित तत्व आदि विघ्नों को दूर करायें। भूखे रहने का नाम व्रत नहीं है, क्योंकि भूखे रहने से शरीर की शक्ति क्षीण होती है। अतः भूख लगने पर भोजन अवश्य करना चाहिए, अन्यथ बहुत सी बीमारियां हो जाती हैं। कुछ लोग दूसरे के नुकसान होने का व्रत करते हैं और उससे प्रसन्न होकर प्रसाद चढ़ाते हैं। है न अनोखी मान्यता।

पूर्वांचल राजार्य सभा का गठन- राजेन्द्र आर्य बने अध्यक्ष

विनय कुमार आर्य
गोण्डा (उ.प्र.)

अखिल भारतीय राजार्य सभा की प्रान्तीय पूर्वांचल सभा के गठन के समय उपस्थित प्रतिनिधि- केसरी

आर्य समाज का राजनैतिक पार्टी अखिल भारतीय राजार्य सभा का प्रांतीय पूर्वांचल सभा का गठन राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चन्द्र देव शास्त्री की अध्यक्षता एवं आर्य जगत के स्टार प्रचारक व संगठन के राष्ट्रीय प्रवक्ता आचार्य सुरेश जोशी के सानिध्य में आर्य समाज दशहरा बाग में प्रांत के समाजों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में पूर्वांचल राजार्य आर्य सभा का अध्यक्ष गजेन्द्र आर्य को मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय प्रवक्ता आर्य सुरेश जोशी ने नवनियुक्त अध्यक्ष को शुभकामनाएं देते हुये आर्य समाज का भारतीय राजनीति में आने का विस्तार से चर्चा की, आचार्य सुरेश जोशी ने विनोद कुमार आर्य, प्रधान जिला सभा गोण्डा का प्रपोज आयोजन किया, परन्तु विनोद कुमार आर्य ने अपनी वर्तमान व्यस्तता की वजह से जिम्मेदारी नहीं ली और अपने उद्बोधन में कहा कि इतिहास गवाह है कि आजादी में 85 प्रतिशत आर्य समाजी आर्य समाज के पक्षधर के लोगों ने ही अपने प्राणों की आहुति देकर राष्ट्र को आजादी दिलाई। परन्तु राजनीति में कदम नहीं रखा लेकिन वर्तमान में देश की राजनीति महर्षि के सिद्धान्तों के अनुकूल न होने की वजह से आर्य समाज की राजनीति में 'एक नीति राष्ट्र नीति, एक धर्म राष्ट्र धर्म' के लिए महती भूमिका महसूस की गई। जिसमें शिक्षा, भाषा, चिकित्सा, न्याय व्यवस्था, राजनैतिक शुचिता, रोजगार, सामानता, समाज कल्याण एवं मानवता वाद, कृषि उद्योग एवं व्यापार का संग्रहण व्यवस्था, पर्यावरण संरक्षण, सैन्य प्रशिक्षण, राष्ट्र सम्मान, उत्पीड़न एवं अपराध, क्षेत्रीय समस्याओं को लेकर राजनीति में उतरा गया है।

इस अवसर पर ओम प्रकाश मंत्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा बस्ती, गरूण ध्वज शास्त्री सत्य प्रकाश आर्य, मयंक सरन, सत्य प्रकाश श्रीवास्तव एडवोकेट, बहन रूकमणी, जय श्रीराम आर्य, शिव शंकर दूबे, स्वामी माधव रामयती, पवन कुमार आर्य, डा. राजेश विमक देव, अशोक कुमार आर्य, राज कुमार सिंह, हेमंत कुमार आर्य, ब्रह्मचारी जयदेव, शशि भूषण आर्य, लक्ष्मण आर्य, राममुनि शाहजहांपुर, पवन कुमार आर्य, कृष्ण कुमार आर्य, धर्मेन्द्र कुमार आर्य आदि लोगों ने इस चुनाव में भाग लिया। राजार्य सभा का मुख्य उद्देश्य आर्यावर्त, राष्ट्रहित सर्वोपरि है समग्र प्रजा सम्बंधी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर स्वतंत्रता, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करना और राजनैतिक, साम्प्रदायिक, धार्मिक एवं आर्थिक शोषण से मुक्त समाज की स्थापना करना।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य के जन्मोत्सव के अवसर पर उनके सम्मान का भव्य दृश्य- केसरी

आर्य नेता अनिल आर्य का जन्मोत्सव

कुरीतियों के विरूद्ध जागरण आर्यसमाज का दायित्व : मीनाक्षी

अनिल आर्य के व्यक्तित्व से प्रेरणा लें युवा : स्वामी आर्यवेश

प्रवीन आर्य / देवेन्द्र भगत
नई दिल्ली।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज, अमर कालोनी, लाजपत नगर, नई दिल्ली में जितेन्द्र डावर की अधयक्षता में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली व आसपास के क्षेत्रें से सैकड़ों कार्यकर्ता बधाई देने पंहुचे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवा कर किया व गायक पं.लक्ष्मीकांत काण्डपाल के मधुर भजन हुए।

समारोह की मुख्य अतिथि सांसद मीनाक्षी लेखी ने कहा कि आज समाज में बदलाव की जरूरत है, पाखण्ड-अन्धाविश्वास बढ़ रहे हैं, सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आर्य समाज को फिर से आगे आने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सक्रिय रहने से समाज में सुधार कार्य तेज होता है। देश की एकता अखण्डता में भी आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब इस कार्य को और अधिक आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अनिल आर्य जी समाज उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। मैं इन्हें इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि अनिल आर्य का व्यक्तित्व हजारों युवाओं के लिये प्रेरणा का स्रोत है। इनका युवा उत्थान में उल्लेखनीय योगदान है, साथ ही सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दों पर हमेशा अग्रणी भूमिका निभाते है, समाज को इनसे बहुत आशायें हैं।

मानवता के आदर्श महर्षि दयानन्द सरस्वती

अश्विनी कुमार पाठक आर्य

महर्षि दयानन्द में गौतम, कपिल का पाण्डित्य, हनुमान का ब्रह्मचर्य, शंकराचार्य जैसा योगी, भीम जैसा बलवान, महात्मा बुद्ध जैसा त्याग और वैराग्य, योगीराज कृष्ण और शिवाजी जैसी नैतिकता, महाराणा प्रताप जैसा शौर्य, महर्षि व्यास जैसी आध्यात्मिकता, श्रीराम जैसी मर्यादा थी। महाकवि निराला ने लिखा है कि महर्षि दयानन्द से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण नहीं है। (वन्दना के स्वर, पृ0-218)

महर्षि दयानन्द ने लिखा था कि 'मनुष्य वह है, जो मननशील हो। अन्याय करने वाले बलवान से भी न डरे और कमजोर धार्मिक का भी सम्मान करे।' उन जैसा नैष्ठिक ब्रह्मचारी और तेजस्वी शरीर वाला और कहां है? उन जैसा करुणाशील, अपने विष देने वाले को भी बन्धनमुक्त करने वाला क्षमाशील, अपमान करने के लिए शब्दों के अलावा कीचड़, ईंट, पत्थर तथा अन्य निकृष्ट हथियार प्रयोग करने वालों के प्रति भी दयाशील और उदार मन वाला कहां मिलेगा? बुद्धि-वैभव का धनी, जो अपने विरोधियों को तर्कजाल से ऐसे कुचल दे, जैसे सूर्य का प्रकाश। मिथ्याभिमानी पंडितों को ऐसे खदेड़ दे, जैसे मृगमण्डल को वनराज। ऐसा योगी और वेदों का विद्वान और कहां है? योगी अरविन्द ने लिखा है कि 'महापुरुषों को अगर पर्वत की चोटियां मानें तो दयानन्द सबसे ऊंची चोटी हैं।' उन जैसा सच्चा देशभक्त और सब मतों का जानकार कहां मिलेगा? उनके मन में किसी भी मत से द्वेष नहीं मिलेगा। उनका लक्ष्य केवल अन्य मतों की जानकारी देना था। वह केवल वेद की विशेषता बताना चाहते थे, क्योंकि चार वेद ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ माने जाते हैं, जिनका ज्ञान चार ऋषियों को मिला था। वह अपने विचार किसी पर थोपते नहीं थे, कोई माने चाहे न माने। अनेक ईसाई और मुसलमान भी उनके मित्र थे।

१०७- डी ब्लॉक,
वसुन्धरा ऐन्क्लेव, सैक्टर ६,
द्वारका, नई दिल्ली

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ
सत्यार्थ प्रकाश
मूल्य- ५०/-, १५०/-
प्रकाशक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

वर चाहिए

वैदिक विचारों की संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

वधु चाहिए

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए।
सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 15 जनवरी 2019 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनराशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिश: धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

**-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)**

❑ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❑ अभय आर्य (9927047364),
नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❑ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

हार्दिक श्रद्धांजलि

देवराज आर्य का निधन एक अपूर्णनीय क्षति

हरिद्वार। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के पूर्व प्रधान एवं वर्तमान में छायाप्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपमंत्री देवराज आर्य के अकस्मात निधन पर उनकी स्मृति में आर्य समाज ज्वालापुर में आयोजित शोक सभा में प्रान्त के सभी क्षेत्रों से पहुंचे आर्यजनों ने हार्दिक श्रद्धांजलि दी। सभा प्रधान डॉ0 विनय विद्यालंकार ने देवराज आर्य के सरल स्वभाव व आर्य समाज के प्रति निष्ठा एवं लगन की चर्चा करते हुए कहा कि आर्य जी का असमय जाना संगठन की अपूर्णीय क्षति है। ज्ञात हो कि श्री आर्य दिल्ली में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 के लिए बड़े ही उत्साह के साथ लगे हुए थे। वे इस महासम्मेलन के प्रचार एवं धनसंग्रह में जुटे थे। इसी क्रम में अपने डेंगू ज्वर को सामान्य ज्वर मानकर उपचार भी ले रहे थे, किन्तु डेंगू बिगड़ जाने से चिकित्सक उन्हें बचा नहीं पाये। उनकी स्मृति सभा में बड़ी संख्या मं आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

एक समर्पित व्यक्तित्व थे इं० हजारीलाल आर्य

हरिद्वार। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के पूर्व प्रधान उदारमना, समाजेसवी महादानी इंजी0 बाबू हजारीलाल (90) के अकस्मात निधन पर आर्य संस्थाओं में गहन शोक व्यक्त किया गया। ज्ञातव्य है कि श्री आर्य वर्ष 2005-08 व 2011-14 तक दो बार सभा के प्रधान रहे। उनकी स्मृति में आयोजित शान्ति सभा में बड़ी संख्या में सहभागी आर्यजनों एवं अनेक अन्य संस्थाओं के अधिकारियों ने उन्हें एक समर्पित व आदर्श व्यक्तित्व कहते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अपित की।

बी०पी० रुस्तगी को पत्नीशोक

नई दिल्ली। शकरपुर निवासी बी0पी0 रुस्तगी की पत्नी संतोष देवी (68 वर्ष) का आकस्मिक निधन हो गया। वह पिछले दिनों से कैंसर से पीड़ित थीं। संतोष देवी एक धर्मपरायणा, मृदुभाषिणी, उदार हृदया, गृहणी थीं। उनका परिवार आर्य समाज से जुड़ा था। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

ओम प्रकाश रुस्तगी नहीं रहे

मुण्डिया धुरेकी (बदायूं) उ. प्र.। आर्यसमाज के पूर्व प्रधान तथा दयानन्द बाल मन्दिर जू0हा0 के पूर्व प्रबन्धक ओम प्रकाश रुस्तगी (80) जीवनयात्रा को पार कर इस संसार सागर से विदा हो गये। उनके निधन पर दिल्ली में आयोजित शोक सभा में कहा गया कि वे एक कर्मठ, सहृद एवं लगनशील व्यक्तित्व के धनी थे।

डॉ० वेदप्रकाश आर्य नहीं रहे

देहरादून। कन्या गुरुकुल द्रोणस्थली, देहरादून के कुलपिता डॉ0 वेदप्रकाश आर्य का निधन हो गया। उन्हें गुरुकुलों के प्रति विशेष लगाव था। वे जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के प्रति समर्पित रहे। वे एक स्नेहिल व्यक्तित्व थे। डॉ0 अन्नपूर्णा इस गुरुकुल की प्राचार्या हैं। श्री आर्य जी के जीवन का एक ही ध्येयवाक्य था कि ''गुरुकुल खोलो, संस्कृत बोलो''। वे सबके लिए उत्साह, कर्मठता, सहजता, उदारता और साहस की प्रतिमूर्ति थे।

आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से सभी दिवंगत दिव्यात्मनों को हार्दिक श्रद्धांजलि।

संक्षिप्त समाचार

वैदिक सत्संग सम्पन्न

बिजनौर (उ.प्र.)। आर्यसमाज आत्मानन्द धाम के परिसर में 16 दिसम्बर को वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी के प्रवचनों से ज्ञान गंगा प्रवाहित हुई।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रांची। आर्य समाज रांची एवं आर्य प्रतिनिधि सभा झारखण्ड का वार्षिकोत्सव 23 से 25 दिसम्बर तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित थे।

बलिदान दिवस मनाया

अमृतसर। 23 दिसम्बर को आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द में गुरुकुल कांगड़ी तथा कन्या महाविद्यालय, जालंधर के संस्थापक महान राष्ट्रवादी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़ी ही श्रद्धा से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी वेदप्रकाश सरस्वती, संचालक आत्म प्रज्ञा आश्रम, बाधनी (नूरपुर) ने स्वामी श्रद्धानन्द के परोपकारी एवं बलिदानी जीवन पर प्रकाश डाला। अरुण कुमार भजनोपदेशक ने अपने मधुर भजनों से ज्ञानवर्षा की। कार्यक्रम में श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

डॉ० सुशील कुमार त्यागी सम्मानित

डॉ० विजय कुमार त्यागी
हरिद्वार।

'उत्कृष्ट राजभाषा लेखन सम्मान' पाते हुए डॉ. अमित त्यागी– केसरी

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के प्राध्यापक उपाचार्य हिन्दी कवि एवं लेखक डॉ0 सुशील कुमार त्यागी 'अमित' को भारती प्रौद्यागिकी संस्थान (आईआईटी), रुड़की के राजभाषा हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित राजभाषा (हिन्दी) पखवाड़ा समारोह में भौतिक विज्ञान विभाग के बोस सभागार में संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ से प्रकाशित 'मंथन' पत्रिका के 15वें अंक में प्रकाशित लेख ''यौगिक जीवन पद्धति से मानव-कल्याण'' हेतु सर्वोत्तम द्वितीय स्थान प्राप्त होने पर उत्कृष्ट राजभाषा लेखन के लिए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कार्यवाहक कुलपति, विश्लेषक, साहित्यकार, एवं स्तंभकार प्रो0 सुधीश पचौरी, कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो0 अजित कुमार चतुर्वेदी द्वारा डॉ0 सुशील त्यागी को 'प्रमाण-पत्र' देकर सम्मानित किया। राजभाषा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो0 नागेन्द्र कुमार ने शुभ कामनाएं एवं बधाई दी।

डॉ0 सुशील त्यागी का मानना है कि हिन्दी के बोलने और लिखने में हमारी भावी पीढ़ी को गर्व होना चाहिए। हिन्दी संसार की सरल, मधुर और वैज्ञानिक भाषा है। हमें हिन्दी के प्रेमचन्द, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद जैसे अनेक साहित्यकारों, कवियों, और लेखकों को पढ़ना चाहिए, तथा काव्य-सृजन और लेखन से जुड़ना चाहिए। डॉ0 सुशील त्यागी विगत कई वर्षों से हिन्दी साहित्य के लेखन से जुड़े हैं तथा हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन अपने देश के साथ-साथ आज विदेशों में भी पूरी तरह हो रहा है। भावी पीढ़ी में भी हिन्दी के संस्कार पैदा कर हिन्दी को समृद्ध बनाएं।

जहां नहीं होता कभी विश्राम — ओ३म् — आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 40वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् **डा. अशोक कुमार चौहान जी**
स्वामी आर्यविश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्म मुनि जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी
के सानिध्य एवं युवा वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 1, 2, 3 फरवरी 2019 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थानः पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली-110026

विराट् शोभा यात्राः शुक्रवार 1 फरवरी 2019, प्रातः 10:30 बजे
पंजाबी बाग व पंजाबी बाग विस्तार के विभिन्न क्षेत्रों में शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

मुख्य आकर्षण

* राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन
* वेद रक्षा सम्मेलन
* शिक्षा-संस्कृति बचाओ सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या
* राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन
* राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था रहेगी

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 15 जनवरी 2019 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्कः श्री दुर्गेश आर्य-9868664800, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 15 जनवरी 2019 तक गोपाल जैन-9810756571, प्रदीप गोगिया-8800550785, विनोद कालरा-9899444347, संतोष शास्त्री-9868757140, देवमित्र आर्य-9313199062 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है
कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''
के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल,
चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदकः

अनिल आर्य — राष्ट्रीय अध्यक्ष — 9810117464
महेन्द्र भाई — राष्ट्रीय महामन्त्री — 9013137070
धर्मपाल आर्य — कोषाध्यक्ष — 9871581398
सुभाष आर्य, रवि चड्डा, सत्यानन्द आर्य — स्वागताध्यक्ष — 9810667581, 9818343460, 9313923155

आशीर्वादः आनन्द चौहान, दर्शन अग्निहोत्री, ठाकुर विक्रम सिंह, डा. रिखबचन्द जैन, आर.पी. सूरी, राजेन्द्र लाम्बा, अमरनाथ बत्रा, नरेन्द्र आर्य सुमन, चन्द्रमोहन खन्ना, ओमप्रकाश जसुजा, कस्तूरीलाल मक्कड़, सुरेन्द्र मानकटाला, प्रकाशचन्द आर्य, सुशील गुलाटी, पी.के. सचदेवा, ओम सपरा

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, सुभाष बब्बर, भानुप्रताप वेदालंकार — राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुशील आर्य — राष्ट्रीय मंत्री
आनन्दप्रकाश आर्य, विश्वनाथ आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, रामकृष्ण शास्त्री — राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य — राष्ट्रीय मंत्री
सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य — व्यवस्थापक

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 7550568450
E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

भारतीय संस्कृति में विश्व शांति व सर्व कल्याण की भावना

भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत वैदिक अर्थात् सत्य सनातन धर्म है। वेद सार्वभौमिक व अपौरूषेय ग्रन्थ है जो वैदिक धर्म के आधार हैं। आर्ष चिन्तन में 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की भावना है, 'सर्वे सन्तु निरामया:' की कामना है तथा 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भागभवेत्' के मनोभाव के साथ वैश्विक कल्याण का आहवान किया गया है। भारतीय संस्कृति में विश्व शांति, अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, पारस्परिक मैत्री व भाईचारे के साथ ही चर-अचर, जड़-जंगम, चेतन-अचेतन सहित मानव के समग्र विकास के तत्व विद्यमान हैं। हमारे चिन्तन में 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात् सारी पृथ्वी ही एक परिवार है, के सिद्धांत को अपनाते हुए विश्व शांति के आदर्श को स्वीकार किया गया है। भारत ने विश्व में शांति और अमन कायम करने के पंचशील के सिद्धांत का अनुसरण किया है, जिसके आधार पर भारत मानव कल्याण, राष्ट्रों की सम्प्रभुता, एकता व अखंडता तथा विश्व शांति की स्थापना के लिए एक दूसरे की प्रादेशिक अखंडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करता है, एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाही न करने की हिमायत करता है तथा एक दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप न करते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करता है। इसी दृष्टि से भारत की विदेश-नीति राज्यों में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति में आस्था व्यक्त करती है। हमारे शास्त्रीय चिन्तन में 'इयं निज: परोवेति गणना लघु चेतसाम्' तथा 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव विद्यमान हैं जिसका आशय है कि 'तेरे मेरे की बात तो क्षुद्र व संकीर्ण मनोवृत्ति के लोग ही करते हैं, उदार चरित्र लोगों को तो सम्पूर्ण वसुन्धरा ही एक परिवार है।'

निश्चय ही, विश्व में सामुदायिक विकास, मानवता की संरक्षा एवं पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जहां शाति का स्थापत्य जरूरी है वहीं, आतंकवाद, अंधाधुंध शस्त्रीकरण व युद्ध जैसी विभीषिकाओं से लड़ने के लिए भी वैश्विक स्तर पर शांति, सद्भाव व मैत्रीपूर्ण वातावरण की आवश्यकता है।

विश्व शांति की स्थापना के लिए ही वैश्विक स्तर पर जिस यू.एन.ओ. अर्थात् संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय हुआ है, वह यू.एन.ओ. तथा उससे जुड़ी समस्त संस्थाएं, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन, सिविल सोसायटी व राष्ट्रीय सरकारें प्रतिवर्ष 21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस का आयोजन करती हैं। शांति का संदेश दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचाने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र ने कला, साहित्य, सिनेमा, संगीत और खेल जगत की विश्व विख्यात हस्तियों को शांतिदूत के रूप में भी नियुक्त कर रखा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने तीन दशक पहले यह दिन सभी देशों और उनके निवासियों में शांतिपूर्ण विचारों को सुदृढ़ बनाने के लिए समर्पित किया था।

यहां इस बात का उल्लेख करना निश्चय ही आवश्यक होगा कि भारत ने विश्वशान्ति की इस नीति को सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों ही स्तरों पर आत्मसात किया है। इसी कारण भारत ने अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष को रोकने तथा विश्व में शांति की संस्कृति को विकसित करने के लिए हमेशा यू.एन.ओ. का समर्थन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि भारत विश्व शांति का प्रबल पक्षधर है। इसी क्रम में भारत सरकार के समग्र प्रयासों से वैश्विक स्तर पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की मान्यता मिलना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

वास्तव में वैदिक चिन्तन से ही सम्पूर्ण विश्व में शान्ति, सद्भाव व उदार सोच का संदेश जा सकता है। इस बात से कदापि इंकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय संस्कृति ही विश्व की ऐसी एकमात्र अनुकरणीय संस्कृति है जिससे सम्पूर्ण विश्व में शान्ति, सद्भाव, एकता व समग्रता का संदेश जाता है। हम सभी को अपनी पुरातन भारतीय संस्कृति पर गर्व है।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।

मकर संक्रान्ति की सही तिथि १४ जनवरी नहीं, २२ दिसम्बर

सुमनकुमार वैदिक

पृथ्वी, जो सूर्य की परिक्रमा अण्डाकार पथ में करते हुए एक वर्ष पश्चात् पुन: उसी बिन्दु पर आ जाती है, मकर संक्रान्ति उस दिन होती है। जिस दिन दिनमान सबसे छोटा और रात्रि सबसे बड़ी होती है अर्थात् मकर रेखा पर सूर्य लम्बवत् हो जाता है। इसके पश्चात् दिनमान में वृद्धि होने लगती है, जिसे सूर्य का उत्तरायण कहा जाता है। संक्रान्ति का अर्थ संचरित या प्रसारित होना है। सौर माहों का परिवर्तन होने वाला दिन संक्राति कहलाता है। सौर वर्ष में बारह संक्रान्तियां आती हैं, जिनके नाम बारह राशियों के नाम पर हैं। पृथ्वी इस दिन के पश्चात् सूर्य के उत्तर पथ पर चलने लगती है। इस दिन सौर मास समाप्त हो तपस मास का या चन्द्रमास 'माघ' का प्रारम्भ हो जाता है। हेमन्त ऋतु समाप्त हो शिशिर ऋतु का प्रारम्भ जहां होता है, वही सबसे छोटा दिन और सबसे बड़ी रात्रि होती है। यह दिन ईस्वी कलैण्डर के अनुसार 22 दिसम्बर को पड़ता है। यह घटना जनवरी मास में कभी पड़ती थी। 71 वर्ष में एक-एक दिन घटने से यह आज 22 दिसम्बर को होने लगी। आज ज्योतिषी अज्ञानी बन रहे हैं। विद्वान लोग अपने बच्चों को ज्योतिष का ज्ञान नहीं दे रहें हैं, जिस कारण गलत पंचांग बन रहे हैं। इससे हम मकर संक्रान्ति ही गलत तिथियों में नहीं मनाते बल्कि पर्व भी गलत ऋतुओं और माह में मना रहे हैं। नक्षत्र, जो अट्ठाइस हैं तथा असमान परिमाण के हैं, जिनका विवरण वेद में आता है, आज के ज्योतिष उन्हें 27 एवं एक समान परिमाण का मानते हैं। एक नक्षत्र अभिजित का परिमाण कुछ नहीं मानते। राशियों को रोमन ज्योतिष से लिया गया है, जो काल्पनिक है। यजुर्वेद में बारह सौर मास का विवरण आता है- मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नभस्य, ईष, ऊर्ज, सहस, सहस्य, तपस, तपस्य। मुगलकाल में वेद को त्याग दिया। वेद के सौर माह के स्थान पर चन्द्र मासों को अपना लिया। चन्द्रमा ऋतुओं का ज्ञान नहीं करता, जिस कारण तिथिपत्रों में विसंगतियां आ गयीं। सूर्य हमें वर्ष में चार बार ऐसे बिन्दु बताता है, जिससे हमारे तिथिपत्रकों की ऋतुओं पर पकड़ बनी रहती है। एक दिन सबसे छोटा, दो बार दिन-रात बराबर, तथा एक दिन सबसे बड़ा। कुछ लोग तर्क देते हैं कि पूर्णिमा अमावस्या से हम तिथियों पर नियंत्रण रखते हैं। यहां तक तो ठीक है, किंतु यह पूर्णिमा या अमावस्या किस माह की है, कैसे सिद्ध करेंगे?

हमारे तिथिपत्रक की दूसरी विसंगति है संवत्सर और माह के प्रारम्भ में अन्तर। संवत्सर का प्रारम्भ प्रतिपदा से अर्थात् शुक्ल पक्ष में करते हैं, और माह का प्रारम्भ कृष्ण पक्ष से करते हैं। इस कारण चैत्र के दो माह पन्द्रह दिन के होते हैं। एक वर्ष के प्रारम्भ में, और दूसरा वर्ष के अन्त में। इस प्रकार वर्ष में बारह नहीं, तेरह माह होते हैं। संवत्सर का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से और माह का प्रारम्भ कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि पड़वा से करते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में मास के अन्त के लिए अमावन्त शब्द आया है, जिसका भाव अमावस्या से है।

अमावश्या के पश्चात् का पक्ष शुक्ल तथा पूर्णिमा के पश्चात् का पक्ष कृष्ण पक्ष कहलाता है। कृष्ण और शुक्ल पक्ष हमारे जीवन में भी घटित होते हैं। जिस काल में मानव के समक्ष नाना आपत्तियां होती हैं, वह मानव का कृष्ण पक्ष होता है। उस काल में निराशा नहीं, दृढ़ता रहनी चाहिए, जिससे एक समय हमारे जीवन का शुक्ल पक्ष भी आ जाता है। उस काल में चाहे संसार के सारे सुख-संपदा क्यों न हों, अभिमान नहीं होना चाहिए। अभिमान ही अंधकार का प्रतीक है। दक्षिणायन और उत्तरायण दो पक्ष होते हैं। दिनमान के छोटे होने की तिथि 22 जून दक्षिणायन की प्रथम तिथि होती है। इसी दिन से वर्षा ऋतु का प्रारम्भ और ईष सौर मास या श्रावण चन्द्रमास का प्रारम्भ होता है। उत्तरायण से दिनमान की वृद्धि होती है। अयन का अर्थ है मार्ग। यह प्रकृति या बाह्य जगत की घटना है। मनुष्य में जब अज्ञान के कारण काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह रूपी दैत्य रहते हैं, उस काल तक उसका जीवन दक्षिणायन में रमण करता है। जिस कारण मनुष्य वाममार्ग छोड़कर जीवन मानवीयता दर्शन विज्ञान से गुथा रहता है। वही काल उसके जीवन का उत्तरायण होता है। चाहे प्रकृति में दक्षिणायन हो। उस काल में आत्मा जब ब्रह्मज्ञानी बना आत्मा शरीर को आत्मा त्यागता है, तो वह उच्च गति को प्राप्त होता है।

महाभारत युद्ध के पश्चात् जब घायल भीष्म पितामह वाणों की शैया पर थे, तो द्रौपदी से कहते थे- पुत्री! आज मेरे शरीर से जितना दूषित रक्त बाहर जा रहा है, उतना ही मेरा आत्मा उत्तरायण की दिशा में गति कर रहा है। दुर्योधन के पाप के अन्न खाने से बना दूषित रक्त मेरे और बुद्धि में रमण कर गया था, जिसने मेरी बुद्धि और विवेक को भ्रमित कर दिया था, जिससे तुम्हारे चीरहरण के प्रयास में तुम्हारी सहायता न कर सका। इसलिए मैंने संकल्प लिया है कि जब तक मेरा जीवन उत्तरायण नहीं हो जाएगा, तब तक इस शरीर को नहीं त्यागना है। भीष्म पितामह एक वर्ष चार दिवस वाणों की शैया पर रहे। उनका उत्तरायण में शरीर त्यागने का अर्थ सूर्य के उत्तरायण में जाने से नहीं था। पितामय भीष्म की तो यह प्रतिज्ञा थी कि जब तक मुझे आत्मबोध नहीं होगा, तब तक शरीर को नहीं त्यागूंगा। इसी प्रकार माता मदालसा आदि ऋषिकाओं और ऋषियों ने अपने जीवन को उत्तरायण बनाकर शरीर को त्यागा।

महर्षि दयानन्द पौराणिक पंचांगों की विंगतियों को जान चुके थे। उन्हें शुद्ध करना चाहते थे। किंतु उससे पूर्व उनको शरीर त्यागना पड़ा। ऐसा डॉ0 भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित पुस्तक प्रोफेसर महेश प्रसाद मौलवी ग्रन्थावली में दिये महर्षि दयानन्द के पत्राचार से प्रमाणित होता है।

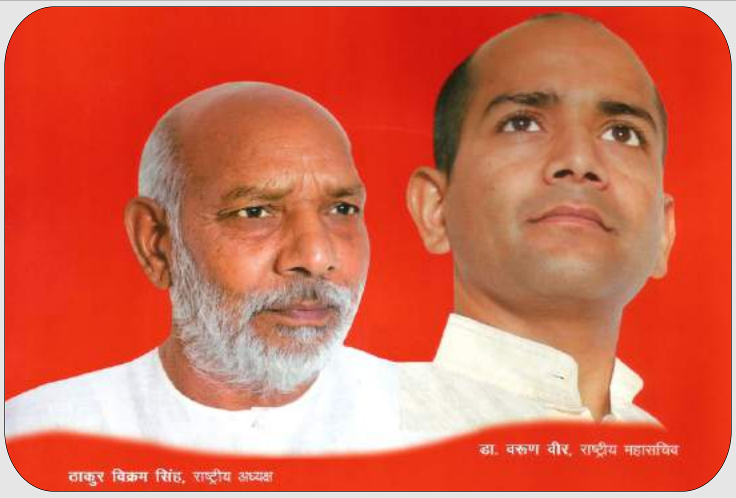

अराजकता, भ्रष्टाचार, शेषण, सरकारी लूट-खसोट, तानाशाही, बलात्कार, मुस्लिम तुष्टिकरण, कॉरपोरेट लूट

अमीर और भी अमीर / गरीब और भी गरीब ● जनता कंगाल नेता मालामाल

क्या इसी के लिए हम स्वतंत्र हुए थे?

हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्तान- अब न सहेंगे हम अपमान

आइए, मिलकर इन सबके विरुद्ध एक नई आजादी के लिए संघर्ष करें

राष्ट्रभक्तों का संगठन

राष्ट्र निर्माण पार्टी

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनीतिक दल

ठा० विक्रम सिंह- राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० वरुण वीर- राष्ट्रीय महासचिव

क्षेत्रीय कार्यालय : ए-41, लाजपतनगर II, निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24, फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938

प्रान्तीय कार्यालय : मोदीपुरम बाईपास, निकट- रेलवे फाटक, मेरठ (उ0प्र0), फोन : 0121-3191555, 9971284450, 9917063562

सुना है आज मकतल में हमारा इम्तिहां होगा : रामप्रसाद बिस्मिल

सोमेश 'पाठक'

कवि का अपना एक काव्यलोक होता है। वह लोक जहां वह स्वयं मार्तण्ड होता है, बल्कि उससे भी कहीं अधिक। उसकी पहुंच स्वयं मार्तण्ड को भी लजाने का साहस रखती है। ब्रह्माण्ड की ऐसी कोई वस्तु अथवा स्थान दिखता या सूझता नहीं है, जहां तक कवि की कविता अपनी दस्तक न दे आयी हो। अजब सी शक्ति है ये, जो परमात्म-वर्णन की ठान ले तो भक्ति का शिखर भी इसकी छत्रछाया में रहता है, जो वीरता को वश में कर छन्दबद्ध कर दे तो क्षत्रियों की तलवारें युद्ध नहीं करतीं। बिजलियां कड़काती हैं, जो प्रकृति के किसी मनोहर दृश्य को अचित्र में चित्रित कर दे तो स्वयं सौंदर्य को भी शरम आ जाए, जो करुणा की ओर रुख कर ले तो और का तो पता नहीं, पर हृदयवान मनुष्यों के लिए सम्भव नहीं कि अपनी अश्रुधारा रोक सकें। न जाने कौन सी दैवीय शक्ति है, जिसने कवि और उसकी कविता में ऐसा बेजोड़ सम्बन्ध स्थापित किया, जिसे मानव-बुद्धि सुलझाने में अक्षम है। कवि अगर भक्त बन जाए तो कविता भक्ति बन जाती है। कवि योद्धा बन जाए, तो वह वीरता बन जाती है। कवि भावुक हो जाए, तो वह आंखों से बहती अश्रुधारा, और कवि अगर क्रान्तिकारी बन जाए, तो कविता क्रान्ति बन जाती है। सच पूछो तो कवि का जीवन ही उसकी कविता है अथवा कवि की कविता ही उसका जीवन है। हम ऐसे ही एक कवि की कविता लिखने बैठे हैं या कहें कि क्रान्तिकारी की क्रान्ति।

अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' का जन्म 11 जून सन् 1897 ई0 को खिरनीबाग मुहल्ला शाहजहांपुर (उ0प्र0) में हुआ था। आपके पिता का नाम पं0 मुरलीधर और माता का श्रीमती मूलमती था। माता-पिता दोनों ही श्रीराम के बड़े भक्त थे। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम भी रामप्रसाद रखा था। प्यार से सब उन्हें 'राम' कहकर बोलते थे। ये राम थे बड़े शरारती। अपनी हरकतों से सारे घर की नाक में दम किये रहते थे। हमारी समझ में तो ये अंग्रेजी हुकूमत की नाक में दम करने का अभ्यास चल रहा था। एक चिन्गारी थी, जिसे भड़क कर जाज्वल्यमान ज्वाला का रूप धारण करना था। जिसके लिए उन्हें आए दिन डांट-डपट पड़ती ही रहती थी और कभी-कभी मार भी। पर राम थे कि अपनी बातों से बाज ही नहीं आते थे। धीरे-धीरे उन्हें चोरी की आदत पड़ गयी। अपने माता-पिता के ही रुपये चुराने लगे। उन रुपयों से उपन्यास खरीदते और उन्हें छिप-छिप कर पढ़ते थे। बहुत छोटी उम्र में ही सिगरेट और भांग का नशा भी करने लगे। उन्होंने खुद लिखा है कि वे लगभग 50 से 60 सिगरेट प्रतिदिन पी लेते थे। एक दिन उनकी चोरी पकड़ी गयी और उन प्रेमपूर्ण उपन्यासों को पंचतत्वों में विलीन होना पड़ा। उपन्यासों की कथा तो यहां समाप्त हो गयी पर चोरी और सिगरेट जारी रही। धीरे- धीरे समझ आयी, तो चोरी भी छूट गयी। एक पास के पुजारी से प्रभावित होकर उन्होंने व्यायाम और पूजा-पाठ भी प्रारम्भ कर दिया। अब बची थी सिगरेट, जिसे उनके सहपाठी सुशीलचन्द्र सेन की सत्संगति ने उनसे सदैव के लिए दूर कर दिया। नित्य व्यायाम करते थे, इस कारण शरीर सुन्दर और बलिष्ठ हो गया था। इन्हीं दिनों उनका मुंशी इन्द्रजीत जी से परिचय हुआ। मुंशी जी ने उनको ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' से परिचित करा दिया। बस फिर क्या था, भटकते राही को उसकी मंजिल मिल गयी। अब रामप्रसाद वो रामप्रसाद नहीं थे। 'सत्यार्थप्रकाश' ने उनके मानस को पूर्णत: बदल कर रख दिया था। इन्हीं दिनों नगर आर्यसमाज में स्वामी सोमदेव जी का आगमन हुआ। मुंशी इन्द्रजीत जी ने आपको उनकी सेवा में नियुक्त कर दिया। यहीं रामप्रसाद और स्वामी जी में गुरु-शिष्य का संबन्ध स्थापित हुआ। गुरु-शिष्य में अनेक राजनीतिक विषयों पर चर्चा होती थी। रामप्रसाद के अन्दर क्रान्ति का बीज इन्हीं स्वामी जी ने बोया था। अब रामप्रसाद एक आदर्श ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। देशभक्ति का जुनून उनके खून में उफनते सागर की तरह हिलोरें मार रहा था। सच तो यह है कि वे पैदा ही देश के लिए हुए थे। उनसे अपनी भारत मां के कष्ट देखे न जाते थे। मां की छाती के वे जख्म, जो नासूर बन गये थे, उन्हें अपने जख्म लगने लगे थे। मां की पीड़ा उनकी अपनी पीड़ा हो गयी थी। तभी तो वे स्वयं को 'बिस्मिल' (जख्मी) कहते थे।

सन् 1915 में भाई परमानन्द को फांसी (जो कि बदल कर काला पानी कर दी गयी थी) की सजा हुई। यह खबर सुनते ही बिस्मिल ने ठान लिया था कि अब ब्रिटिश साम्राज्य को समूल नष्ट करना है। चाहे जान ही क्यूं न चली जाए। अरे! धिक्कार है उस सर पर, जो मातृगौरव की रक्षा न कर सके और धड़ से जुड़ा रहे। बिस्मिल ने कहा भी तो था-

''सरफरोशी की तमन्ना
अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना
बाजु-ए-कातिल में है।।''

सन् 1916 में मैनपुरी विप्लव दल के नेता श्री गेंदालाल जी गिरफ्तार हुए। इस समय बिस्मिल की आयु मात्र 19 वर्ष थी। श्री गेंदालाल जी को छुड़ाने के विचार से पहली डकैती उन्होंने इसी उम्र में डाली थी। इस डकैती में बिस्मिल के साथ 15 विद्यार्थी और थे, जिनका नेतृत्व बिस्मिल ही कर रहे थे। इससे इतना तो स्पष्ट है कि नेतृत्व की क्षमता उनमें जन्मजात थी। यहां कोई यह न समझ ले कि डकैती उनका पेशा था। बल्कि यह तो ब्रिटिश सरकार के खिलाफ उठी एक आवाज थी, जिसे हम क्रान्ति कह सकते हैं अथवा दूसरे शब्दों में 'बिस्मिल' की 'कविता'।

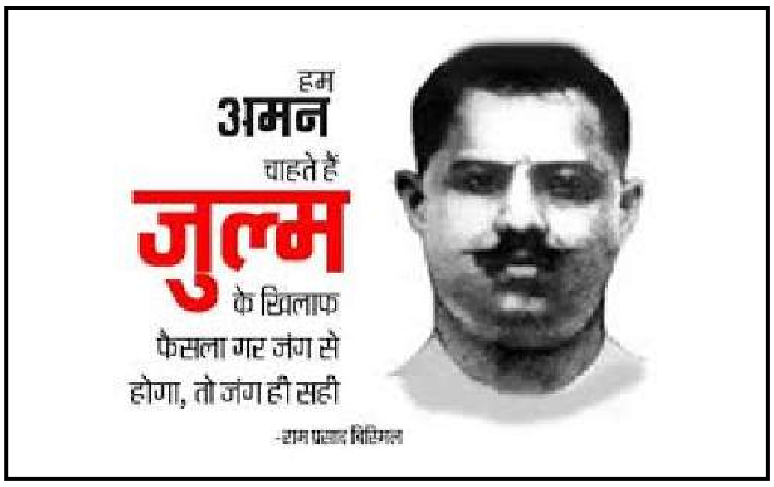

डकैती जैसे कार्यों में भी बिस्मिल के अपने उच्च आदर्श थे। उन्होंने कभी किसी मातृशक्ति के सम्मान पर आंच न आने दी। कभी किसी बेकसूर पर जुल्म न होने दिया। जो किया अपने देश, अपनी भारत मां के लिए किया। उनका स्वार्थ तो ऋषि दयानन्द ने पहले ही उनसे ले लिया था। अब वे अपने लिये करते भी तो क्या करते?

बिस्मिल और उनके साथियों के कारनामों से ब्रिटिश शासन पूरी तरह हिल चुका था। चन्द गद्दारों ने अगर अंग्रेजों का साथ न दिया होता, तो यह देश बहुत पहले ही आजाद हो जाता, और हमारे वीर बांकुरों को फांसी के फंदों पर झूलना न पड़ता। जो हो, उस गद्दारी की चर्चा हम यहां करना भी नहीं चाहते। खैर।

बिस्मिल को क्रान्तिकारी दल का नेता माना जाने लगा। दूर-दूर से क्रान्तिकारी आ-आ कर उनकी सेना में सम्मिलित हो रहे थे। बिस्मिल का एक स्वभाव था कि पहले तो वे किसी कार्य को हाथ में लेते न थे, और अगर लेते थे तो उसे बखूबी निभाते थे। एक समय ऐसा भी आया था, जब उन्हें उत्तरप्रदेश के क्रान्तिकारियों का नेतृत्व करते हुए बंगाल के क्रान्तिकारियों का भी नेतृत्व करना पड़ा था। जो कि बिस्मिल जैसे नेता के ही बस का काम था।

9 अगस्त सन् 1925 ई0 को बिस्मिल के नेतृत्व में काकोरी काण्ड हुआ। हरदोई से लखनऊ जा रही ट्रेन को काकोरी और आलमनगर के बीच 52 नम्बर खम्भे के पास रुकवाया गया और उसमें जा रहा सरकारी खजाना लूटा गया। यह लूट लगभग 10 हजार रुपये की थी। इसी लूट की गिरफ्तारी में बिस्मिल को भी गिरफ्तार होना पड़ा। बिस्मिल को गोरखपुर जेल में बन्द कर दिया गया। अभियोगों का एक लम्बा सिलसिला चला और अन्त में वही हुआ, जो होना था। राजनीतिक षड्यंत्रों के तहत बिस्लिम को फांसी की सजा सुनाई गयी। इस घटना में एक बिस्मिल ही फांसी पर नहीं चढ़े, बल्कि तीन बिस्मिल और थे। वे तीन बिस्मिल राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशनसिंह और अशफाकउल्ला खां थे।

इसी गोरखपुर जेल में अपनी आत्मकथा लिखी। बिस्मिल को बन्दूक ही नहीं, कलम भी चलाना आता था। न सिर्फ चलाना, बल्कि उच्च कोटि के लेखकों में उनकी गिनती होती है। श्रेष्ठ कवियों में उनका नाम आता है। सारा संसार उनके काव्य का लोहा मानता है। आज भी लोगों की जुबान पर उनके गीत चढ़े हुए हैं और सदा चढ़े रहेंगे। उनके जीवनकाल में उनकी 11 पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने काव्य, इतिहास, अनुवाद आदि साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया। उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी लिखा। वे 'राम' और 'अज्ञात' आदि उपनामों से लिखा करते थे। साहत्य जगत भी उनका सदैव ऋणी रहेगा। ये बात और है कि उनके साहित्य के एक बड़े भाग को नष्ट किया जा चुका है। अस्तु।

उन्होंने अपनी मृत्यु के तीन दिन पूर्व अपनी आत्मकथा का अन्तिम अध्याय लिखा, जिसकी प्रारम्भिक पंक्तियां निम्नलिखित हैं-

''आज 16 दिसम्बर 1927 ईस्वी को निम्नलिखित पंक्तियों का उल्लेख कर रहा हूं, जबकि 19 दिसम्बर 1927 ई0, सोमवार (पौष कृष्ण 11, संवत् 1984) को 6.30 बजे प्रात:काल इस शरीर को फांसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी है।''

इन पंक्तियों से बिस्मिल के जिगर का पता लगता है। किसी योगी की सी स्थिति मालूम होती है। अरे! जिस मौत की कल्पना तक मनुष्य के चित्त का संतुलन खो देती है, वह मौत सामने खड़ी है और बिस्मिल आत्मकथा लिख रहे हैं। यह ऋषि दयानन्द का चमत्कार नहीं तो और क्या था?बिस्मिल! धन्य है तुम्हारी मां, जिसने तुम जैसे वीर को जन्म दिया। उस दिन को कौन भूल सकता है, जब तुम्हारी मां तुमसे जेल में मिलने आयी थी और तुम्हारी आंखों में अपने लिए आंसू देखकर कहने लगी थी- ''मैं तो समझती थी कि तुमने अपने पर विजय पायी है, किंतु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकर अब अन्तिम समय तुम मेरे लिए रोने बैठे हो। इस कायरता से अब क्या होगा, तुम्हें वीर की भांति हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आप को धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गये बीते जमाने में भी मेरा पुत्र देश की वेदी पर प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पालकर बड़ा करना था। इसके बाद तुम देश की चीज थे और उसी के काम आ गये। मुझे इसमें तनिक भी दुख नहीं है।''

इतिहास के स्वर्णाक्षरों में उस मां के ये शब्द सदैव अमर रहेंगे।

आज लगभग डेढ़ साल जेल में रहने के बाद उस शरारती राम को फांसी के फंदे पर लटकना था। किस अपराध का दण्ड था ये?इसका कि वे अपनी भारत मां के बेड़ियों में न देख सकते थे या इसका कि भाई परमानन्द की फांसी से वे आहत हो गये थे अथवा इसका कि मां के जख्म अपने जख्म मान लिये थे। भगवान् जाने....।

प्रात:काल नित्यकर्म और सन्ध्या-वन्दन आदि से निवृत्त हो अपनी मां को एक पत्र लिखा, जिसमें कि समस्त देशवासियों के लिए शान्ति का संदेश था। इसके बाद फांसी के लिए बुलाने वाले आये, तो 'वन्देमातरम्' और 'भारत माता की जय' कहते हुए तुरंत उठकर चल दिये और चलते वक्त उन्होंने कहा था-

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,/ बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।/ जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,/ तेरा ही जिक्र या,/ तेरी ही जुस्तजू रहे।''

फांसी की कोठरी के सामने खड़े होकर उन्होंने कहा था- I wish the downfall of British Empire. (मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूं)। इसके बाद फांसी के तख्ते पर चढ़कर 'विश्वानि देव....' आदि मंत्रों का पाठ किया और अपनी कविता का अन्तिम अध्याय पूरा किया। मार्तण्ड अस्त हुआ।

शेष पृष्ठ- १० पर.....

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

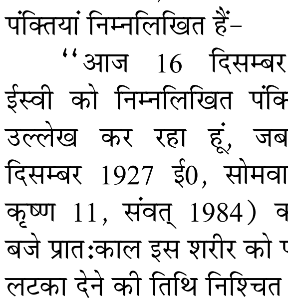

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

आयुष्मान् भव
(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)
१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण
: पुस्तक प्राप्ति स्थल :
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)– 243003
चल0 : 09412372179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

ऐसे होते हैं आर्य

नेपाल के अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री

रामेश्वर सिंह

जिस देश के नागरिक अपने शरीर का त्याग देश के लिए नहीं करते, उस देश का इतिहास श्रीहीन समझा जाता है। नेपाल में भी ऐसे नागरिकों की कमी नहीं, जिन्होंने अपने देश के लिए खून न बहाया हो। उसमें आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु खून बहाने वालों में शुक्रराज शास्त्री का नाम है। क्रुड़ राणा शासन द्वारा मुक्ति दिलाने के लिए वि0स0 1997 माघ, 10 गते शुक्रराज शास्त्री को वृक्ष में झुलाने के सिलसिले में उन्होंने कहा कि मैं अपने गले में स्वयं डोरी बाधूंगा। नीचे रखी ईंट पर चढ़कर स्वयं गले में डोरी बांधकर और पैर की ठोकर से ईंट को अलग कर फांसी पर झूल गये।

शुक्रराज शास्त्री ने अपनी विशेषता दिखाई। इस घटना का गम्भीर रूप से नेपाली जनता पर प्रभाव पड़ा और इसी कारण से वि0स0 2007 साल में नेपाली क्रान्ति का शुरुआत हुआ। इनके पिता माधवराज जोशी ने वि0स0 1994 में नेपाल नागरिक अधिकार समिति के संस्थापक में प्रेरणा स्रोत में आये थे। माधवराज जोशी ऋषि दयानन्द सरस्वती से साक्षात वार्ता से प्रभावित होकर इनके भक्त हो गये थे और नेपाल के आर्य समाज के संस्थापक माने जाते हैं। इनके समय में नेपाल में जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह, नारी की दुर्गति, मूर्तिपूजा आदि का पाखण्ड व्याप्त था। वि0स0 1996 में माधवराज जोशी ने इन पाखण्डों के विरुद्ध आवाज उठायी थी।

इस सिलसिले में उन्होंने कहा था कि पशुपतिनाथ के मन्दिर में देवता के स्थान पर पत्थर ही है। और इसलिए उन्हें प्रशासक के द्वारा बड़ी मार खानी पड़ी थी। इतना ही नहीं, उन्हें देश से भी निकाल दिया गया था। वे अपने पुत्र अमरराज, द्वितीय शुक्रराज, तृतीय वाचस्पतिराज, पुत्री चन्द्रकान्ता के साथ भारत आये और उन सबको सिकन्द्राबाद गुरुकुल में प्रवेश दिलवाकर शिक्षा दिलवायी। शिक्षा प्राप्त कर पुनः जब स्वदेश वापस आये, तो दूसरी बार आर्य समाज की स्थापना की। 'मलामी गुठी' नाम का संगठन संचालित किया। इसी समय में शुक्रराज शास्त्री द्वारा 'ब्रह्मसूत्र शंकर भास्य' का नेपाली में अनुवाद हुआ। तत्कालीन प्रशासक द्वारा शुक्रराज शास्त्री को नजरबंद कर दिया गया। इस अवधि में भी उन्होंने काठमाण्डू के इन्द्रचौक में गीता के कर्मयोग के रहस्य के विषय में भाषण दिये। तत्कालीन प्रशासक द्वारा बिना अनुमति से भाषण दिये जाने आदि के कारण उन्हें फांसी दे दी गयी। इसके बावजूद भी प्रशासक को शान्ति न मिली। शुक्रराज के भाई अमरराज जोशी शव लेने गये तो प्रशासन ने शव देने से इंकार कर दिया और शव को घसीट कर उनके घर तक पहुंचाया गया। यह दृश्य नेपाली जनता के लिए प्रेरणास्रोत बन गया। उनके भाई ने शुक्रराज शास्त्री के शव का दाहसंस्कार किया।

उस समय प्रशासक का मन्तव्य जनता को यह संदेश देना था कि प्रशासक यदि दिन को रात कहे, तो सब मानें और रात को दिन कहे तो भी सब लोग स्वीकार करें। लेकिन शुक्रराज शास्त्री इस बात को मानने वाले नहीं थे।

आज नेपाली महिलाएं भी शुक्रराज शास्त्री की स्मृति में 10 गते माघ को नेपाली महिला जागरण दिवस के रूप में मनाती है। उनकी बहन चन्द्रकान्ता के वर्षों के अथक प्रयास द्वारा काठमाण्डू के बाग बाजार में शहीद शुक्र माध्यमिक विद्यालय संचालित है। हमने एक बार लगभग वि0स0 2045-46 में उक्त विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाध्यापक से भेंट कर पूछा कि चन्द्रकान्ता व शुक्रराज शास्त्री के नजदीक के नातेदार काठमाण्डू में कोई है, तो पता बताइए। जवाब मिला- नहीं हैं।

(शनिवार 12 गते वि0स0 2053 साल को 'कान्तिपुर' में प्रकाशित निबन्ध का हिन्दी अनुवाद। सहयोगी– रामचन्द्र साह)

न०पा०- धनगढ़ी माई, मकान नं०- ९०
जिला- सिरहा (नेपाल)

नियमित कॉलम

ऐसे होते हैं आर्य

सम्माननीय पाठकवृन्द!

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में **'ऐसे होते हैं आर्य'** नाम से एक नियमित कॉलम प्रकाशित किया जा रहा है। अतः प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
मोबा. : 9412139333

ईमानदारी, सत्यनिष्ठा,
और सबके प्रति प्यार।
ऋषि मिशन को है समर्पित,
जिनका जीवन व्यापार।
प्रेरित करता है हम सबको,
जिनका श्रेष्ठ व्यवहार।
हों शतायु रह निरामय,
प्रार्थना है बारम्बार॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के यशस्वी प्रधान एवं न्यास के सम्मान्य न्यासी माननीय भाई श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य के 77वें शुभ जन्मदिवस के मंगल अवसर पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

-अशोक आर्य

ऋग्वेद

॥ ओ३म् ॥

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

॥ योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ॥

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और
नवीन संस्करण
प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70
दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर **दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ**

राष्ट्र की विलक्षण विभूति, प्रख्यात उद्योगपति, एम०डी०एच० के स्वामी

'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल जी

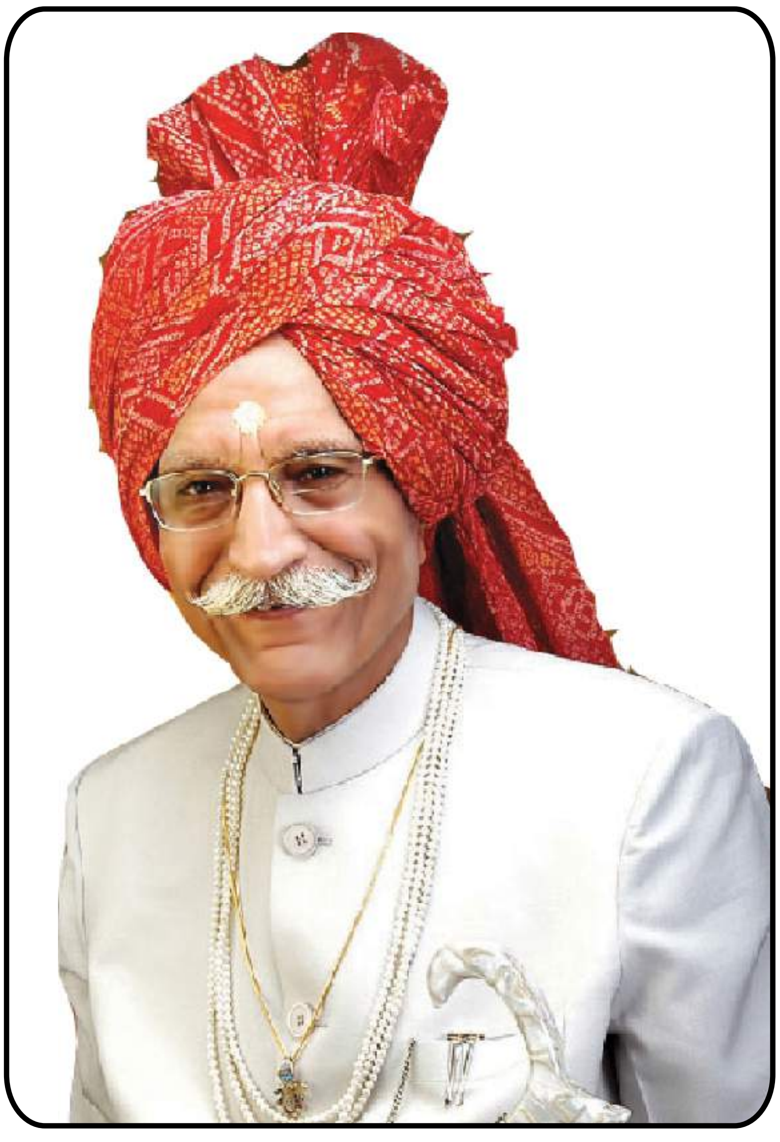

जिनके पावन सहयोग से समाजसेवा के लिए समर्पित हैं ये संस्थान

तांगाचालक से जो बने मसालों के शहंशाह

आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी राष्ट्र की एक ऐसी विभूति हैं, जिन पर हम सभी को नाज है। वे एक प्रख्यात उद्योगपति ही नहीं, अपितु एक ऐसे महामानव हैं, जिनके पावन सहयोग से भारतीय संस्कृति व सभ्यता से जुड़ी अनेकानेक संस्थाएं निरंतर संचालित हो रही हैं। वे बड़े ही उदार भाव से देश की विभिन्न संस्थाओं को सहयोग प्रदान करते रहते हैं, फिर चाहे धार्मिक संगठन हों या सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा शैक्षिक, गुरुकुल हों या चिकित्सालय, समाजसेवी लोकोपयोगी न्यास हों या शिक्षा-मन्दिर, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम हों या अतिथि भवन, सभागार हों या विश्रामालय, गऊशालाएं हों या अनाथालय, न जाने कितने ही ऐसे क्षेत्र हैं, जिन्हें महाशय जी निरंतर अपने उदात्त सहयोग से सम्बल प्रदान करते हैं। निश्चय ही वे आर्यरत्न हैं। ईश्वर से कामना है कि वे इसी प्रकार दीर्घकाल तक जनसेवा व लोककल्याण के कार्यों में तत्पर रहें। जीवेम शरदः शतम - भूयस्य शरदः शतात्..... -डॉ० अशोक कुमार आर्य (सम्पादक)

वे संस्थाएं, जो महाशय जी के पावन योगदान से पल्लवित व पुष्पित हैं-

1. महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, ढांसा (दिल्ली)
2. लीलावंती लैबोरेट्री (नई दिल्ली)
3. आकांक्षा आई0वी0एफ0 सेंटर (नई दिल्ली)
4. माता चन्नन देवी हॉस्पिटल, सी-1, जनकपुरी (नई दिल्ली)
5. एम0डी0एच0 परिसर निर्वाण न्यास, अजमेर (राजस्थान)
6. महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर, हरिनगर (नई दिल्ली)
7. एम0डी0एच0 इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर-6, द्वारका (नई दिल्ली)
8. एम0डी0एच0 इंटरनेशनल स्कूल, जनकपुरी (नई दिल्ली)
9. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 वानप्रस्थ आश्रम, परली बैजनाथ, जिला- बीड (महाराष्ट्र)
10. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया, जिला- झाबुआ (म0प्र0)
11. एम0डी0एच0 गौशाला ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान)
12. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 गौशाला जीवन प्रभात गांधीधाम, कच्छ (गुजरात)
13. महाशय धर्मपाल अन्तर्राष्ट्रीय अतिथिगृह, ग्रेटर कैलाश-1 (दिल्ली)
14. महाशय धर्मपाल कन्या छात्रावास गुरुकुल, चोटीपुरा, जिला- अमरोहा (उ0प्र0)
15. महाशय धर्मपाल आर्य स्थाई निधि, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली)
16. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 सभागार, आर्य समाज, जनकपुरी बी-ब्लाक (नई दिल्ली)
17. महाशय धर्मपाल बनवासी सभागार, आर्य समाज, तिहाड़ग्राम (नई दिल्ली)
18. महाशय धर्मपाल संस्कृत भवन, गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम, हरिनगर (नई दिल्ली)
19. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 विद्यालय, विंग, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
20. महाशय धर्मपाल सेवा भवन, आर्य समाज, डी0सी0एम0 रेलवे कालोनी (नई दिल्ली)
21. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 सभागार, आर्य महिला आश्रम, राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली)
22. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 सभागार, आर्य समाज, कीर्तिनगर (नई दिल्ली)
23. महाशय धर्मपाल छात्रावास भवन, बामनिया (म0प्र0)
24. महाशय संजीव कुमार धर्मार्थ औषधालय, गांव गुल्लरवाला, करसौली तहसील, नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश)
25. माता लीलावंती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या इंटर कालेज, खुशीपुरा, मथुरा (उ0प्र0)
26. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 आरोग्य मन्दिर, सेक्टर- 76, फरीदाबाद (हरियाणा)
27. सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ एम0डी0एच0 परिसर, उदयपुर (राजस्थान)
28. महाशय संजीव पब्लिक स्कूल, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)
29. महाशय धर्मपाल सांस्कृतिक यज्ञ केन्द्र (राजस्थान)
30. माता लीलावंती सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर (राजस्थान)
31. महाशय धर्मपाल आर्य संवाद केन्द्र (नई दिल्ली)
32. माता लीलावंती सरस्वती विद्या मन्दिर, हरिनगर (नई दिल्ली)
33. महाशय धर्मपाल गौशाला, वनिता आश्रम, देहरादून (उत्तराखण्ड)
34. महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर, सुभाष नगर (नई दिल्ली)
35. महाशय धर्मपाल जी गौशाला (औचंदी)
36. महाशय धर्मपाल विश्रामगृह, भिवानी जेल (हरियाणा)
37. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 वेद अनुसंधान केन्द्र, कालीकट, कोझीकोड (केरल)
38. महाशय धर्मपाल स्थाई निधि, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा)
39. महाशय धर्मपाल भवन, आर्य समाज, खजूरी खास (नई दिल्ली)
40. महाशय धर्मपाल स्थाई निधि, गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
41. महाशय धर्मपाल प्रवेशद्वार, आर्य अनाथालय (हरियाणा)
42. महाशय धर्मपाल स्वावलंबन गृह, सिरसा जेल, सिरसा (हरियाणा)
43. महाशय धर्मपाल ओपन एअर थियेटर, भिवानी जेल (हरियाणा)
44. महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान भवन, करनाल (हरियाणा)
45. माता लीलावंती आर्य कन्या गुरुकुल, पिल्लूखेड़ा (हरियाणा)
46. महाशय धर्मपाल दयानन्द विद्या निकेतन, भामल, झाबुआ (म0प्र0)
47. महाशय धर्मपाल आर्य स्थाई निधि, आर्य केन्द्रीय सभा (नई दिल्ली)
48. महाशय धर्मपाल यज्ञशाला, आर्य समाज, त्रिनगर (नई दिल्ली)
49. एम0डी0एच0 वृद्ध सेवा सभागार, आर्य महिला आश्रम, राजेन्द्र नगर (नई दिल्ली)
50. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 दयानन्द विद्या निकेतन, देवघर (झारखण्ड)
51. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, धनश्री, जिला- कार्बी आंग्लांग (आसाम)
52. एम0डी0एच0 संजोग सेवा, कीर्तिनगर (नई दिल्ली)
53. महाशय धर्मपाल एम0डी0एच0 सभागार, आर्य समाज, नारायण विहार (नई दिल्ली)
54. एम0डी0एच0 पार्क, नागौर (राजस्थान)
55. माता लीलावंती सरस्वती शिशु मन्दिर, टैगोर गार्डन (दिल्ली)
56. महाशय धर्मपाल हृदय संस्थान, सी-1, जनकपुरी (नई दिल्ली)
57. एम0डी0एच0 स्कूल, बेदगी (कर्नाटक)
58. महाशय संजीव आरोग्य केन्द्र, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
59. ज्योति ऑप्थैलमिक लेजर सेंटर (नई दिल्ली)
60. एम0डी0एच0 न्यूरोसाइंस संस्थान (दिल्ली)

ब्रह्म तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित एक श्रेष्ठ पुस्तक

आर्य पर्व पद्धति

(केवल 15/- में)

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

सम्पर्क- 9412139333

घर-घर तक पहुँचाएं कालजयी ग्रंथ

सत्यार्थ प्रकाश

: प्रकाशक :
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)

मूल्य- ५०/-, १५०/- सम्पर्क- 9412139333

आवश्यकता है

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित आर्ष साहित्य के वितरण व बिक्री हेतु ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो विभिन्न स्थलों पर स्टॉल लगा सकें तथा व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्थल पर साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु सम्पर्क कर सकें। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें।

-प्रबन्धक, मोबा. : 9412139333

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का आयोजन

पानीपत। सर्वकल्याणकारी धर्मार्थ न्यास (पंजी0) पानीपत, हरियाणा द्वारा आयोजित 'अद्भुत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का शुभारम्भ स्मृतिशेष आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, रोजड़, गुजरात की प्रेरणा व निर्देशन से कैप्टन अभिमन्यु, वित्तमंत्री, हरियाणा सरकार के सानिध्य में गत 1 अक्टूबर 2017 को गांव बसई, गुरुग्राम में किया गया था। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने 5 लाख रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान कर ज्योति प्रज्वलित की। 1 अक्टूबर 2017 से 30 सितम्बर 2018 तक सूर्योदय से सूर्यास्त तक प्रतिदिन 12 घण्टे लगातार 365 दिन तक यज्ञप्रेमी महानुभावों के सहयोग व आशीर्वाद से यह आयोजन निरंतर चलता रहा।

गत 30 सितम्बर 2018 को समापन समरोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ0 देवव्रत आचार्य ने की और अपने सारगर्भित उद्बोधन से श्रोताओं का मार्गदर्शन कर पर्यावरण की रक्षा हेतु यज्ञ की महत्ता का विस्तृत वर्णन किया तथा न्यास को दो लाख रुपये का आर्थिक सहयोग करने की घोषणा भी की।

इस अवसर पर अपना आशीर्वाद देने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ0 सत्यपाल सिंह आर्य (मंत्री भारत सरकार) ने यज्ञ की विशेषताओं पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। वरिष्ठ अतिथि सुरेश चन्द्र आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) सुरेन्द्र आर्य (चेयरमैन जेबीएम ग्रुप) डॉ0 विनय विद्यालंकार (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड) आचार्य सत्यजित एवं आचार्य संदीप (रोजड़, गुजरात) आदि ने भी समापन समारोह में पधारकर यज्ञ व पर्यावरण के विषय में जानकारी दी, व न्यास की प्रशंसा की। डॉ0 विनय विद्यालंकार ने मंच का सफल संचालन कर समरोह को सम्पन्न कराया। सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान) ने 1 लाख 51 रुपये का दान दिया। समारोह की सभी प्रकार की व्यवस्था गांव बसई (गुरुग्राम) की ओर से की गयी। अमंत्रित महानुभावों व विद्वानों का सम्मान भी किया और एक वर्ष तक यज्ञ में गांव वालों का सहयोग भी निरंतर मिलता रहा। न्यास अध्यक्ष महात्मा वेदपाल आर्य ने सभी आमंत्रित महानुभावों, विद्वानों, भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे यज्ञप्रेमी श्रद्धालुओं, गांव बसई के निवासियों, सभी अधिकारियों व सदस्यों और विशेष तौर पर इस यज्ञ की धुरी रहे संयोजक सुरेन्द्र सिंह तोमर, श्री दलजीत सिंह, का धन्यवाद व आभार प्रकट किया।

आर्य समाज बरमिंघम (यू०के०) से श्रीराम आर्य का पत्र

आर्यसमाज बरमिंघम भवन को अधिगृहीत करने का निर्णय ब्रिटिश सरकार ने हाई स्पीड रेल लन्दन से बरमिंघम तक निर्माण करने के लिए वर्ष 2017 में लिया और आर्य समाज बरमिंघम को किसी अन्य स्थान पर ले जाने के लिए भरपूर धन देने का अश्वासन दिया। आर्य समाज बरमिंघम के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने एक 100 वर्ष पुराने मजबूत चर्च को आर्य समाज मन्दिर बरमिंघम के रूप में परिवर्तित करने हेतु क्रय करने का निर्णय लिया, जिसके लिए 6,50,000 पौण्ड की राशि पुराने मन्दिर के मुआवजे के रूप में प्रदान किया, और 321, रूकरी रोड, हैन्ड्सवर्थ, बरमिंघम स्थित 100 वर्ष पुराने चर्च को 6,50,000 पौण्ड में ही खरीदा गया। 23 अगस्त 2017 को चर्च भवन में आवश्यक नवीनीकरण का कार्य सम्पन्न कराने के पश्चात् 29 अप्रैल 2018 को इस नये आर्य समाज भवन का उद्घाटन भारत के राजदूत श्री यशवर्धन कुमार सिन्हा के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य समाज भवन के समक्ष ओ3म् ध्वज लगाने हेतु 35 फीट ऊंचा ग्लास फाइबर पोल बनाया जा चुका है, जिसके लिए मेरी उपस्थिति में जगह का निर्धारण गत 25 जुलाई 2018 बुधवार को सत्संग के पश्चात् किया गया।

इस नये आर्य समाज भवन में 3 विशाल हाल हैं, जिसमें एक का नामकरण स्वामी दयानन्द हाल, दूसरे का नामकरण स्वामी श्रद्धानन्द हाल किया गया है, और तीसरा हाल यज्ञशाला के रूप में किया गया है। मैं 25 जुलाई 2018 दिन बुधवार को आर्य समाज बरमिंघम के नये भवन के अवलोकनार्थ सपत्नीक वहां के प्रधान डॉ0 नरेन्द्र कुमार के आमंत्रण पर गया था। डॉ0 नरेन्द्र कुमार के अथक परिश्रम से नये भवन का रूपान्तर आर्य समाज मन्दिर के रूप में हो सका है।

प्रति रविवार का सत्संग 11 बजे से 2 बजे तक होता है, जिसमें संध्या, हवन, भजन व प्रवचन के कार्यक्रम होते हैं, और अंत में ऋषिलंगर भोजन का प्रबन्ध। प्रति मंगलवार को शाम 5 से 6 बजे तक बच्चों के लिए योगशिक्षा का कार्यक्रम किया जाना प्रारम्भ किया गया, जिसमें बच्चों के माता-पिता, बच्चों को साथ लायेंगे, जिससे अभिभावकों पर आर्य समाज का प्रभाव पड़ेगा। प्रत्येक बुधवार को 11 बजे से 1 बजे तक वरिष्ठ नागरिकों के लिए यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम आचार्य उमेश यादव के द्वारा किया जाता है, तथा 1 बजे से 2 बजे तक ऋषि लंगर का कार्यक्रम रहता है। 3 वर्ष की आयु तक के बच्चों के स्वयं उनके माता-पिता 10-30 बजे से 12 बजे तक आर्य समाज मंदिर में आकर 'पेरेंट्स एण्ड टोडलर' के रूप में कुछ सीखने का कार्यक्रम कर सकते हैं। रविवार को 2 बजे से 3 बजे तक संस्कृत भाषा का क्लास आचार्य उमेश यादव द्वारा होता है।

नये आर्य समाज मन्दिर का वर्तमान पता इस प्रकार है-

आर्य समाज (वैदिक मिशन)
वैस्ट मिडलैण्ड्स
३२१, रूकरी रोड, हैण्ड्स वर्थ,
बरमिंघम- बी २१९ पीआर
(यू०के०), फोन- ३५९७७२७

पृष्ठ- 7 का शेष

रामप्रसाद बिस्मिल...

बिस्मिल के बलिदान की खबर सुनकर गोरखपुर जेल के चारों ओर भारी भीड़ एकत्रित हो गयी। फांसी की कोठरी के सामने वाली दीवार तोड़कर बिस्मिल का शव उनके परिजनों को सौंपा गया। शव को लेकर पूरे गोरखपुर शहर में जुलूस निकाला गया। इस बलिदानी की अन्तिम यात्रा में लगभग डेढ़ लाख की भीड़ थी। बिस्मिल का अन्तिम संस्कार राप्ती नदी के किनारे राजघाट पर हुआ और पूर्ण हुई बिस्मिल की वो हसरत, जिसका उन्होंने कभी जिक्र किया था-

''अब न अहले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,/ एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है।''

प्यारे भाइयो! यह एक बिस्मिल की कहानी है, न जाने कितने बिस्मिल इस देश की खातिर स्वयं को होम कर गये। कष्ट होता है, जब आज का तथाकथित पठित वर्ग उन्हें गाली देता है। वो भी तुच्छ राजनीतिक स्वार्थों के लिए। अरे! राजनीति करने के लिए तो तुम्हें और भी कई मुद्दें मिल जाएंगे। प्यारे शहीदों की शहादत को बदनाम न करो। उनकी चिताओं पर मेले न लगाओ तो न सही, पर उनकी राख पर लातें तो न मारो। बजस आजादी की आबोहवा में हम पैदा हुए हैं और सांस ले रहे हैं, उस आबोहवा की कीमत उन्होंने अपनी सांसों से चुकाई थी। मेरा निवेदन है कि कम से कम एक बार तो बिस्मिल की आत्मकथा पढ़कर देखो। मेरा विश्वास है कि अगर भारत की मिट्टी से बने होगे, तो आंखें जरूर नम होंगी और खेद होगा कि जाने-अनजाने उन शहीदों के बारे में क्या-क्या कह गये, जिनकी शहादत की नींव पर हमारी खुशियां और इस देश की आजादी टिकी है। याद करो 'हितैषी' की उन पंक्तियों को जिनमें उन्होंने अपने ख्वाबों का नक्शा खींचा था-

इलाही वो दिन भी आएगा, जब अपना राज देखेंगे,/ जब अपनी ही जमीं होगी, और अपना आसमां होगा।/ शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,/ वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।''

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि

'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' आर्यों का ब्रह्मास्त्र है। ऐसा ब्रह्मास्त्र, जिसने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अन्धश्रद्धा, अविवेक और पाखण्ड मानव समाज में सहज ही पनपने वाली समस्या है। इसलिए प्रत्येक काल, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक परिस्थिति में इन समस्याओं के उन्मूलन की आवश्यकता है। अत: 'सत्यार्थप्रकाश' की आवश्यकता भी सदैव ही अनिवार्य रहेगी। परन्तु यह विचार जन-जन तक पहुंचे, तो ही लाभकारी होगा।

प्रत्येक आर्यमात्र की यह इच्छा होगी कि वह भी इस ग्रन्थ को वितरित कर पुण्य का भागी बने। इसके लिए सभा प्रत्येक आर्य को इस महायज्ञ में सम्मिलित करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे, तो यज्ञ और अधिक भव्य एवं विस्तृत हो जाता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के नि:शुल्क वितरण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए आप अपने सामर्थ्यानुसार सहयोग दे सकते हैं। परोपकारिणी सभा की ओर से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश बड़े अक्षरों में, बढ़िया कागज पर, सजिल्द छापी जाती है, जिससे नये व्यक्ति के लिए भी पुस्तक संग्रहणीय बन जाती है। इस पुस्तक की छपाई में एक प्रति का खर्च लगभग 100 रुपये आता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी सात्विक भावना से केवल 20 पुस्तकें (इससे अधिक कितनी भी) ही वितरित करवाना चाहता है, तो सभा उतनी प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित करेगी इसी प्रकार 30, 50, 100 आदि।

100 रु0 प्रति के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं। आहुतियां जितनी अधिक होंगी, यज्ञ का फल भी उतना ही अधिक होगा।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थ प्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम और पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनीऑर्डर भी कर सकते हैं। यह यज्ञ आपका है, प्रत्येक आर्य का है। अत: प्रत्येक आर्य इसमें अपनी आहुति अवश्य दे।

न्यूनतम 20 प्रतियां 2100/- रु0
30 प्रतियां3100/- रु0
50 प्रतिया5100/- रु0
100 प्रतियां 11000/- रु0

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियां बांटना चाहें, उतनी और दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें, ताकि प्रतियों की संख्या निर्धारित करके उन पर दानदाताओं का नाम अंकित किया जा सके। धन्यवाद!

खाताधारक का नाम- आर्यावर्त केसरी, बैंक बचत खाता (Saving) सं0 30404724002, IFSC -0000610

-डॉ० अशोक कुमार आर्य

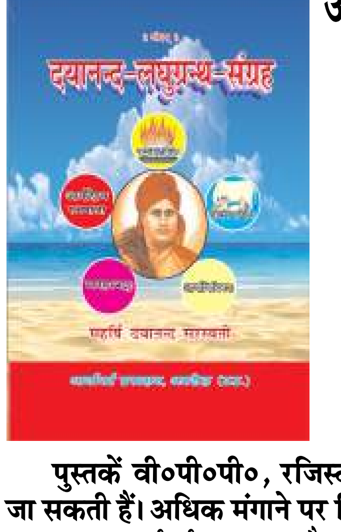

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनय:

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

आदर्श पुरूष

महात्मा चैतन्य स्वामी

वेदों में मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए अनेकशः ऐसे स्वर्णिम् सूत्र दिए गए हैं जिनका अनुकरण करने से व्यक्ति अपने जीवन को महान से सुमहान बना सकता है।ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के संतालिसवें सूक्त में ऐसे बहुत से सूत्र दिए गए हैं जिनका अनुकरण करके व्यक्ति आर्य अर्थात् श्रेष्ठ एवं देव तथा आदर्श पुरूष बन सकता है।इस सूक्त के तीसरे मन्त्र में कहा गया है– उक्षा समुद्रो अरूषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश।

मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ।। (ऋ05–47–3)

हे मानव!यदि तू जीवन में देव अर्थात् एक आदर्श व्यक्ति बनना चाहता है तो तू(उक्षा)अर्थात् अपने शरीर में शक्ति संचय कर क्योंकि शरीर ही उन्नति का मूल कारण है।हमें अपने इस शरीर की कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि इसे निरन्तर परिपुष्ट बनाए रखना चाहिए क्योंकि वास्तव में हमारे सभी लौकिक तथा पारलौकिक कियाकलाप इस शरीर के बिना नहीं चल सकते हैं।जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है या इसे रोगी बनाता है वह परमात्मा की दृष्टि में भी अपराधी है क्योंकि उसने परमात्मा द्वारा प्रदत्त इस दुलर्भ शरीर की सुरक्षा नहीं की।हमारा खान–पान एवं आचार–व्यवहार ऐसा हो जिससे हमारा शरीर निरन्तर परिपुष्ट बना रहे।नियमित दिनचर्या के द्वारा हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं।हमें इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि हमें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए।यदि हम अपने आहार एवं व्यवहार पर सूक्ष्मता से चिन्तन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे तो निश्चित् रूप से हम दीर्घायु को प्राप्त कर सकते हैं बल्कि केवल दीर्घायु प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि दीर्घायु तक हम बोलते रहें, सुनते रहें, देखते रहें, अपने कार्य स्वयं करने की सामर्थ्य बनी रहे यह भी आवश्यक है। निरन्तर प्राणायाम,व्यायाम तथा योगाभ्यास आदि द्वारा अपने शरीर को सदा स्वस्थ रखना चाहिए....

मन्त्र में आगे कहा गया–(समुद्रः)जो अपने भीतर ज्ञान का समुद्र सृजित करता है वह देवता बन जाता है तथा उसका जीवन दूसरों के लिए भी अनुकरणीय बन जाता है।ज्ञान का अर्जन करने वाला व्यक्ति एक आदर्श व्यक्ति बन जाता है।वह स्वयं के भीतर ही आनन्दमयी वृत्ति का सृजन कर लेता है।व्यक्ति को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए।ज्ञान को बढ़ाना तो है ही मगर उस ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को बनाते भी चले जाना आवश्यक है अन्यथा वह ज्ञान भी अनावश्यक बोझ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।व्यक्ति को निरन्तर जीवन में स्वाध्यायशील बने रहना चाहिए अर्थात् निरन्तर आर्ष ग्रन्थों को पढ़ते रहना चाहिए और तदवत् अपना जीवन बनाते चले जाना चाहिए।इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व एक आदर्श व्यक्तित्व बन जाएगा। आगे कहा गया है– (अरूषः) व्यक्ति को कभी कोधित नहीं होना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति को हम किसी प्रकार से भी आदर्श व्यक्ति नहीं कह सकते हैं।देव वह है,आर्य वह है,आदर्श पुरूष वह है जो कभी कोधित नहीं होता है।धर्म के दस लक्षणों में भी मनु महाराज ने एक लक्षण अकोध को रखा है।हमें भी आदर्श व्यक्ति बनने के लिए कोध रूपी चाण्डाल से सदा ही बचकर रहना चाहिए।कोधी व्यक्ति दूसरों का तो विनाश करता ही है मगर उससे पूर्व वह अपना ही विनाशकर बैठता है।कोधी व्यक्ति अपने विवेक को खो देता है और जब व्यक्ति का विवेक ही समाप्त हो जाए तो वह क्या–क्या पापकर्म नहीं कर बैठेगा.... आदर्श व्यक्ति वह है जो– (सुपर्णः) अर्थात् अपने जीवन को उत्तमता के साथ आगे ले जाता हुआ उसे पूर्णता प्रदान करता है। मानव जीवन का लक्ष्य है विवेकी होकर जीवन में लौकिक एवं पारलौकिक सम्पदाओं को प्राप्त करना। इसके लिए धर्म और सत्य के मार्ग पर चलते हुए उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए उसे सदा ही वेद मार्ग का अनुकरण करना चाहिए।वेद के सिद्धान्त की व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार है। स्वयं को वेद–ज्ञान के अनुसार चलाकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करनी चाहिए। अपने आप को सद्गुणों से सजाते–संवारते रहना चाहिए।आगे कहा गया– (पूर्वस्य पितुः योनिं आविवेश) आदर्श व्यक्ति वह है जो परमपिता (सर्वमुख्य पिता)के गृह में प्रवेश करने वाला अर्थात् ब्रम्ह में निवास करनेवाला होता है। हमें प्रभु उपासना को प्रमुखता प्रदान करके अपने जीवन को साधनामय बनाना चाहिए। महर्षि दयानन्दजी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है मगर ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ में वे एक स्थान पर लिखते हैं कि वेद का मुख्य विषय ईश्वर अर्थात् ईश्वर प्राप्ति है।आदर्श व्यक्ति के जीवन का मुख्य लक्ष्य भी ईश्वर प्राप्ति ही होता है.....वेद में आदर्श व्यक्ति का एक और गुण बताया है–(दिवः मध्ये निहितः)जो सदा ही ज्ञान के प्रकाश के मध्य रहता है अर्थात् प्रतिक्षण ज्ञान प्राप्ति में लगा रहता है....ज्ञान ही व्यक्ति के उत्थान का आधार है इसलिए हमें वेदादि शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान की बृद्धि करनी चाहिए और उस ज्ञान के अनुसार अपने जीवन को चलाना चाहिए। ज्ञान से ही व्यक्ति को विवेक प्राप्त होता है और विवेक होने पर ही उसे धर्म–अधर्म, सत्य–असत्य, विद्या–अविद्या आदि का ज्ञान प्राप्त होता है। आदर्श व्यक्ति के लिए आगे कहा गया है कि (पृश्निः) जहां वह ज्ञानज्योति से संस्पृष्ट रहता है वहीं पर (अश्मा) उसका शरीर पत्थर के समान दृढ़ होता है और (विक्रमे) आदर्श व्यक्ति विशिष्ट गति वाला होता है, विक्रम कार्यों को करने वाला होता है। आदर्श व्यक्ति जीवन में कठिन से कठिन कार्य को भी साहस और परिश्रम के साथ करने में सक्षम होता है। वह किसी भी विकट परिस्थिति में अपने कर्त्तब्य से विमुख नहीं होता है। मन्त्र में एक और महत्वपूर्ण बात कही गई है कि आदर्श व्यक्ति (रजसः अन्तौ पाति) रजोगुण के सिरों को बचाता है अर्थात् वह न ही तामसिक होता है और न ही केवल सात्विक बल्कि वह नपी–तुली क्रियाएं करने वाला होता है। वह किसी भी क्षेत्र में अतिवादी नहीं होता है बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदा ही एक सन्तुलन बनाए रखता है। वह प्रत्येक व्यक्ति या परिस्थिति के साथ सदा ही यथायोग्य व्यवहार करने वाला होकर अपनी प्रतिभा का परिचय देने वाला होता है....

–महर्षि दयानन्द धाम,
महादेव, सुन्दरनगर–175018,
हि0प्र0, (मो. 9418053092)

देश–विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने–कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है–

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क– 12000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क– 6500/-

अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क– 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। –प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099

स्वास्थ्य जगत

खजूर

आयुर्वेदिक मत :

मधुर रस, स्निग्ध गुरुगुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक है। यह वात, पित्त शामक है। यह नाड़ियों को ताकत देता, भ्रम, मूर्छा, कटिशूल में लाभ करती है। श्वास, वमन, अतिसार में लाभदायक। उरक्षत कास, श्वास हिचकी में फायदा। मूत्रल है। ज्वरनाशक, दाहनाशक है। अतिशम् पौष्टिक वीर्यवर्धक और बलवर्धक है। हृदय के लिए हितकारी, शीतल, तृप्तिकर भारी एवं क्षुतक्षयहर है। पोषक, बल्य मूत्रल है। धातुपुष्टि में उपयोगी, तृप्किारक है एवं रेचक है।

यूनानी मत :

खजूर के पत्ते कामोद्दीपक और यकृत के लिए लाभदायक हैं। इसके फूल कटु विरेचक, कफ निस्सारक और यकृत के लिए पुष्टिकारक हैं। ज्वर और रक्त संबन्धी रोगों में लाभकारी हैं। खारिक छुआरा भी कामोत्तेजक, पौष्टिक है। खजूर गुदा और मूत्राशय को मजबूत करती, खून बढ़ाती है।

वैज्ञानिक मत :

खजूर में 75 प्रतिशत प्राकृतिक शर्करा (ग्लूकोज) होती है। यह फौरन रक्त में घुल–मिलकर सरलता से पच जाती है। खजूर में पोषक, पाचक और शक्तिदायक तत्व सर्वाधिक मात्रा में हैं। खजूर में कार्बोहाइड्रेट और खनिज द्रव्य प्रचुर मात्रा में हैं। खजूर में अधिकांश भाग 60 से 70 प्रतिशत शर्करा (ग्लूकोज) है। उपरान्त चूना, फास्फोरस और लौह भी अच्छी मात्रा में है।

खजूर में विटामिन ए, बी, सी अत्यधिक मात्रा में हैं। इसमें लौह, कैल्शियम, तांबा, फास्फोरस होने के कारण आहार के रूप में पौष्टिक है। खजूर खाने से विटामिन ए के कारण शरीर के अवयवों का विकास अच्छी तरह होता है। विटामिन बी के कारण हृदय, शरीर और इन्द्रियां स्वस्थ रहती हैं। पाचन तंत्र के स्वस्थ बनने पर भूख खुलती है। शरीर और आंतों की मांसपेशियां बलिष्ठ होती हैं एवं शरीर में से मल आदि का निष्कासन सरलतापूर्वक हो जाता है।

इस प्रकार खजूर आंतों और शरीर को स्वच्छ करती है। कर्नल चौपड़ा के अनुसार पिंड खजूर में लोहा, टेनिन और चूना होता है। यह कफ निकालने वाला, मृदु, रेचक, कामोद्दीपक होता है। श्वास में लाभकारी है।

शहद

आयुर्वेदिक मत :

शहद शीतल, हलका, मधुर, रुक्ष, ग्राही विललेखन, नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निदीपन करने वाला, स्वर को उत्तम करने वाला, व्रण शोधक, रोपण सुकुमारता करने वाला सूक्ष्म स्रोतों को शुद्ध करता है। कसैला, रस से युक्त, आह्लादन करने वाला प्रसादजनक वर्ण को उज्ज्वल करने वाला, बुद्धिकारक, विशुद्ध, रुचिकारक और भेद तृषा वमन श्वास हिचकी अतिसार कलबन्ध कोष्ठ, बवासीर, खांसी पित्त रक्त विकार, कफ प्रमेह, ग्लानि, कृमि दाह सत और क्षेम इन सबको नष्ट करता है। योगवाही किंचित वातकारक है।

शहद के भेद :

माक्षिक भ्रामर क्षौद्र यौन्तिक छात्र आर्घ्य औद्दालक– दाल मधु में अदरक रस मिला चाटें परम चतुर। सांस जुकाम अरु वेदना, निश्चित भागे दूर।।

वैज्ञानिक मत :

शहद में फल शर्करा 42 प्रतिशत और द्राक्ष शर्करा 35 प्रतिशत होती है। इस प्रकार शहद में करीब 87 प्रतिशत ग्लूकोज की मात्रा होती है। ग्लूकोज रक्त में शीघ्र ही मिल जाता है, अतः उसे पचाने के लिए शरीर के अन्य अवयवों को परिश्रम नहीं करना पड़ता। शहद की शर्करा पचने में हलकी, दाह न करने वाली, उत्तेजक, पोषक बलदायक है। जठराग्नि की मन्दता, ज्वर कै तृषा, मधुमेह, अम्लपित्त विष, थकावट, हृदय की दुर्बलता में शहद अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता है। मधुशर्करा में सोमल एन्टीमनी क्लोरोफार्म, कार्बन ट्रेटा क्लोराइड आदि जहरीले द्रव्यों का प्रभाव नष्ट करने की शक्ति भी है। शहद की अम्लता में एन्फाइम के कारण दांतों की अकुन्चन गति को रात्रि में वेग मिलता है। आंतों की क्षमता बढ़ती है। मल स्निग्ध बनता है और सरलता से बाहर निकलता है।

निर्देश : शहद मात्रा से अधिक नहीं खाना चाहिए। बच्चे 20–25 ग्राम और बड़े 40 ग्राम से अधिक एक साथ न खाएं। लम्बे समय तक अधिक मात्रा में शहद का सेवन न करें। शहद का अजीर्ण मार डालने वाला अथवा अत्यंत हानिकारक है।

शहद को गर्म करके उपयोग न करें। शहद और घी एक साथ समान मात्रा में होने पर विषतुल्य है। शहद की मात्रा दो से तीन तोले की है। कफ प्रधान रोगों में घी से शहद अधिक होना चाहिए। आयर्वेद में शहद को गर्म करना निषेध है। आधुनिक विज्ञान में भी शहद के 40 अंशों से अधिक गर्म का निषेध है।

प्रस्तुतकर्ता– हरिश्चन्द्र आर्य
–अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
अमरोहा, ०५९२२–२६३४१२

क्यों कष्ट में है आज की मानवता

आचार्य सोमेन्द्र श्री

जब सृष्टिकर्त्ता ने मनुष्य को पृथ्वी पर भेजा तो साथ में एक संदेश दिया– 'हे मानव! तुम पृथ्वी लोक में जा रहे हो– तुम्हें मैं एक सुन्दर पर्यावरण के साथ भेज रहा हूँ– इसके साथ चलोगे तो तुम्हारा सर्वदा कल्याण ही होगा। यथा–

''सर्वेभवन्तु सुखिनः
सर्वेसन्तु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेद्''

आज सम्पूर्ण विश्व मानव इस उपर्युक्त कथन की अवहेलना कर रहा है। विकास की होड़ में सबको छोड़ वह एकाकी विकास की ओर बढ़ रहा है। उसके विकास में कोई समरसता, सामूहिक विकास की रेखा और आत्मीयता नहीं रह गयी है, जिससे वह बार–बार असफल नजर आता है, तब वह सम्पूर्ण वातावरण को दूषित करने का प्रयास करता है और आतंक फैलाता है, जिसके कारण विश्व भावना खतरे में पड़कर अशांत हो, शांति का मार्ग ढूंढने लगती है। आज समाज में अशान्ति है। मानसिक रूप से लोग त्रस्त हैं। विचारणीय है कि आखिर इसका क्या कारण है। इसी के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के प्रमुख छायाकार कवि स्वर्गीय श्री जयशंकर प्रसाद जी ने अपने महान–ग्रन्थ (महाकाव्य) 'कामायनी' में कहा था कि आज की मानवता क्यों कष्ट में है? अशान्त क्यों है?– इसलिए कि –

ज्ञान–दूर कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडम्बना है जीवन की,

अर्थात् मनुष्य आज अपने को ज्ञानी समझकर सत्य–ज्ञान से दूर हटा जा रहा है, बुद्धि का प्रयोग जहाँ होना चाहिए वहाँ न होकर कहीं अन्यत्र हो रहा है, साथ ही उसकी इच्छा महान से महत्तर बनने की ओर अग्रसरित है, फिर भी वह उत्सुक है क्योंकि उसकी इस क्रिया में मानव मूल्यों का ह्रास हो गया है। वह एकाकी (अकेले) ही सारी दुनिया पर विजय पताका फहराना चाहता है।

प्रकृति ने जो उपहार हमें निःशुल्क विकसित होने के लिये दिया है, उसका ईमानदारी से उपयोग करके, समता की हानि को अपना कर आगे बढ़ने के अर्थ में है। यथा – पर्वत, वनस्पतियाँ, नदी, झील, झरने, कृषि, पशु–अर्जन से विभिन्न प्रकार के उद्योगों का विकास, बिजली, सिंचाई के साधन, अन्य उत्पादक, उसका समान वितरण, आर्थिक एकता, उच्च मानसिकता के द्वारा ही इनका सही प्रयोग कर सम्पूर्ण विश्व में एकता एवं शांति का बीज बो सकते हैं, अन्यथा आज विश्व में जो हाहाकार फैला हुआ है, अशांति के बादल छाये हुए हैं उससे निपटना कठिन हो जाएगा और कठिन हो रहा है।

आज सम्पूर्ण विश्व में शांति की बात हो रही है क्योंकि प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों ने दुनिया को दहला दिया है कि यदि तृतीय विश्वयुद्ध कभी भी हुआ, जिसके बादल बहुत वर्षो से मंडरा रहे हैं तो सम्पूर्ण सृष्टि या तो दहल जाएगी या सर्वनाश हो जाएगा। अतः इसका एक सहज उपाय शिक्षा के माध्यम से आज खोजा जा रहा है, कि शिक्षा के माध्यम से हम कौन सा उपाय विकसित कर विश्व में शांति की स्थापना की जाये जिससे जीवन में समरसता, विश्वास और मानवीय भावनाओं का विकास पुनः किया जा सके।

शिक्षा का ध्येय मानव का विकास करना है, बालक के सोचने–विचारने का क्षेत्र विस्तृत बनाना है,. बड़े लाभ के लिए छोटे लाभ का त्याग करना है, बालक को जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना है, वह कुशल उपभोक्ता बने, अपने पड़ोसियों के साथ रहना सीखे, उनके सुख–दुख में सहायक हो सके। तात्पर्य यह है कि बालक का शिक्षा से बौद्धिक, शारीरिक एवं आत्मिक विकास प्रकृति प्रदत्त सीमाओं तक अधिकतम होना चाहिए, तभी हम जीवन में शांति ला सकते हैं।

–शोधार्थी– संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मो0 9410816724

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य–वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

सम्पर्क करें :
डॉ. अशोक कुमार आर्य
आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन,
गोकुल विहार, अमरोहा
(उ०प्र०)-244221
मोबा. : 09412139333

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
मो. 8368508395, 9456274350

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

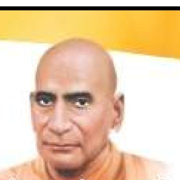

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

शिवालिक गुरुकुल

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से नौवीं तक
2019-20

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES
• Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
• Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
• Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • **E-mail :** shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • **Website :** www.shivalikgurukul.com

ओ३म्
स्वामी श्रद्धानन्द व पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृतौ
कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशाखोरी के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जींद

दिनांक ९ दिसम्बर, २०१८ प्रातः दस बजे से
स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम ३७०५ अर्बन एस्टेट जींद
❖युवा सम्मेलन ❖नशाखोरी व कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन ❖राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

मुख्य उपस्थिति :
स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, चौधरी हरिसिंह सैनी, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य राजेन्द्र जी, विजयकुमार आर्य नरवाना, सुभाष श्योराण जी, बहन प्रवेश आर्या, पूनम आर्या, सहदेव सिंह बेधड़क, कुलदीप आर्य, सुनील शास्त्री आदि।

आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं
संयोजक स्वामी रामवेश जी
सम्पर्क 9416148278, 01681 248638

यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि

विमलेश बंसल 'आर्या'

पर्यावरण बचाना है तो,
घर घर यज्ञ रचाना होगा।
विमल वेद अपनाना होगा।
जलवायु शुद्ध बनाना होगा।।
घर से लेकर चौराहों,
चौराहों से पार्कों तक यज्ञ।
प्रति व्यक्ति यह ठान ले मन में,
कर्तव्य यह करना विश्व को स्वच्छ।
पर्यावरण बचेगा तब ही,
यज्ञों को प्रथम बचाना होगा।
पर्यावरण बचाना है तो
पर्यावरण बचाने के,
पीछे हैं और भी कई कारक।
गायत्री, गौ, गंगाजल,
हरियाली वृक्ष परिधि धारक।
संरक्षण और संवर्धन हित,
इनको बहु फैलाना होगा।
बड़ी गाड़ियां भरे रसायन,
कारखाने चिमनी धुआँ।
जंगल कट कर बने कोठियां,
नदियों पर बांध बंधे बंधुआ।
अपनी कुछ आवश्यकताएँ,
जिन पर कुछ रोक लगाना होगा।
पर्यावरण बचाना है तो
वृक्ष लगाना यज्ञ रचाना,
जलवायु को शुद्ध बनाना।
गौ गोबर उर्वरक खाद से,
सारी पृथ्वी को महकाना।
विमल वेद की बात मान यह,
ओजोन परत (उल्ब– वैदिक नाम)
बचवाना होगा।।

—329 द्वितीय तल संत नगर
पूर्वी कैलाश,
नई दिल्ली—110065
मोबा. : 8130586002

दयानन्द की अमर कहानी

अश्विनी कुमार पाठक आर्य

सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो दयानन्द की अमर कहानी।
जीवन जिसका उज्ज्वल जैसे गंगोत्री का पानी।।
सत्य का मार्ग दिखाने को सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ बनाया।
सत्य ही कहने और सत्य ही लिखने से नहीं घबराया।।
पाखंडखंडिनी पकड़ पताका, अंधविश्वास हटाया।
शास्त्रार्थ करके पाखण्डियों का अहंकार था मिटाया।।
निडर होकर बढ़ा वह आगे जैसी मन की ठानी।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो दयानन्द की अमर कहानी।।
महिलाओं का मान बढ़ाया पतितों को था अपनाया।
स्वराज्य का सबसे पहले उसने ही उद्घोष लगाया।।
फिर होमरूल का नारा देकर तिलक ने जोश दिखाया।
हंसराज ने डीएवी बनाकर विद्या को खूब फैलाया।।
लाला लाजपत ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह को अपनाया।
शहीद भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल ने आगे बढ़ाया।।
फांसी चढ़ गये कई आर्यवीर दे दी थी अपनी कुर्बानी।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो दयानन्द की अमर कहानी।।
लालच धमकी और मौत का खतरा रोक नहीं सका।
सत्य मार्ग पर चलने से कोई रोक नहीं सका।।
इच्छा पूरी हो तेरी भगवन, अन्त समय फरमाया।
पीते जहर प्याले धर्म की खातिर जरा नहीं घबराया।।
अपने विष देने वाले को पुलिस से दूर भगा दिया।
अपने पास से सहायता के लिए कुछ धन भी दिया।।
धन्य-धन्य हे ऋषि दयानन्द तेरा तो आदर्श रहा लासानी।
सुनो सुनो ऐ दुनिया वालो दयानन्द की अमर कहानी।।

म० नं०- १०७, बी ब्लॉक, वसुन्धरा एन्क्लेव,
सैक्टर-६, द्वारिका, नई दिल्ली

दोहे

करूणा ऐसी कीजिये, तुम दीखो सब ओर।
जिसके रस में डूबकर, होऊं भाव विभोर ।।
मिले मन के दमन से, कभी किसी को ईश।
रहे हरि का ध्यान तो, आन मिले जगदीश।।
इन नयनों से दीखता, मुझे उसी का रूप।
व्यापक है हर ठौर पर, उसका रूप अनूप ।।
भीतर बाहर है वही, देख सके तो देख।
जो भी तुझको दीखता, सबमें उसको देख।।
मन में कूढ़ा जो पड़ा, झाडू उस पर मार।
साफ सदा गर मन रहे, आवें शुद्ध विचार।।
दोष और का देखकर, जो हंसता वह कूर ।
कभी न अपने दोष को, कर पाता वह दूर।।
अपने मन के दाग को, लेता तुरत छिपाय।
छिपा हुआ वह पाप ही, सर हर बार उठाय।।
दुर्जन को नित दीखता, चंदा में भी दाग।
दीखत है गुणवान को, पत्थर में भी आग।।

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', 502 जी एच 27,
सैक्टर—20, पंचकूला, मो. 09467608686

भाषा भारतवर्ष की

डॉ. अशोक रस्तोगी

हिन्दी सबसे प्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!
पुष्पाच्छादित क्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
कोख से जन्मा, तो मां की ममता, हिन्दी में ही पायी थी!
और मेरी नन्हीं सी जिह्वा, हिन्दी में तुतलायी थी!
पिता के लाड़ दुलार को मैंने, हिन्दी में ही जाना था!
प्रकृति के सौन्दर्य को भी, हिन्दी में पहचाना था!
महकती साहित्य वारिधि है, भाषा भारतवर्ष की!!
हिन्दी सबसे प्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
हिन्दी में ही हंसता हूँ मैं, हिन्दी में ही रोता हूं!
हिन्दी में मैं देखूं सपने, जब रजनी मे सोता हूं!
हिन्दी में ही बोलता, हिन्दी में ही अध्ययन!
भोरकाल में करता हूं मैं, हिन्दी में ईशाराधन!
अटल प्रेम की अधिकारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
हिन्दी सबसे प्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
लिपि है इसकी देवनागरी, भाषा भी विज्ञानी है!
पुरा संस्कृति की पोषक, देवलोक की रानी है!
ऋषियों मुनियों की भाषा, भारत की पहचान है!
अब इस भाषा की उन्नति में, सबका ही उत्थान है!
पर निर्वासित बेचारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
हिन्दी सबसे प्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
आओ! अब निर्णय लेकर, हम हिन्दी का गुणगान करें!!
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गौरव की पहचान करें!
हिन्दी लिखें, पढ़ें सब हिन्दी, हिन्दी का सम्मान करें!
राजकर्म की भाषा हिन्दी, इसमे ही सब काम करें!
ममतामयी मधुर न्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!
हिन्दी सबसे प्यारी है, भाषा भारतवर्ष की!!

अफजलगढ़ (बिजनौर) उ.प्र.

आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

आपके प्रिय पत्र आर्यावर्त केसरी को देशभर में ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो आर्य जगत, गुरुकुलों, आर्ष संस्थाओं व आर्य समाजों की गतिविधियों के समाचार व विचार प्रकाशनार्थ नियमित रूप से भेज सकें। साथ ही, जन-जन तक आर्यावर्त केसरी का प्रचार-प्रसार करने में सहायक सिद्ध हों।

–सम्पादक (9412139333)

चिता

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

चिता एक कड़वा सच है
गरीब–अमीर सबके लिए
परन्तु – आश्चर्य... महाआश्चर्य
अनजान बने बैठे हैं सब
उठती लपटों से /
उड़ते धुंए से /
मुट्ठी भर राख से /
रोज जल रहीं हैं लाखों चिताएं
छोटे–बडे, गरीब–अमीर
सब लकडियों अथवा विद्युत हीटर में
अपनी कंचन सी काया लिए
हो रहे हैं खाक!
फिर भी फड़फड़ा रहे हैं /
अकड़ पे अकड़ दिखा रहे हैं
भूलकर चिता
बूढ़े भी सेज सजा रहे हैं /
जिंदगी का आखिरी सच है चिता...
ए मनुज! तू जान ले /
पहचान ले इस सच को...

ग्राम रिहावली, पो. तारौली,
फतेहाबाद, आगरा, 283111

ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ और आर्य पर्वों पर केन्द्रित
एक श्रेष्ठ पुस्तक
आर्य पर्व पद्धति
(केवल 20/- में उपलब्ध)
आर्यावर्त प्रकाशन,
अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)
सम्पर्क- 9412139333
आज ही मंगाएं
अर्चना यज्ञ पद्धति
(केवल 12/- में उपलब्ध)
साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण संग्रहणीय पुस्तकें सूची मंगाएं

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

सूचना

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जाएं और लाइक व शेयर अवश्य करें।

-अजय सहगल (टंकारा वाले)

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 28 फरवरी 2019 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

* अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।
* राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।
* नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।
* वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।
* युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

वर्तमान में आर्य समाज द्वारा कुरीतियों के खण्डन संघर्ष विराम के परिणाम से सबक

पं0 उम्मेदसिंह विशारद

युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतवासियों की हजारों वर्षों की गुलामी के साथ–साथ चरम सीमा पर पहुंची धार्मिक, सामाजिक–राजनैतिक मान्य अन्धविश्वासों व कुरीतियों का अति साहस से निभीकर्ता से खण्डन करके भारत ही नहीं, विश्व की जनता को जगाया था और ऋत सत्य, वेदानुकूल मान्यताओं का मंडन किया था। परिणाम स्वरूप सोये भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन से लेकर तमाम धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक सुधारवादी युग का प्रारम्भ हुआ। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने दो अति महत्वपूर्ण कार्य किये– (एक) अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की, जिसने करोड़ों जनमानस को झकझोर कर रख दिया, जिससे वैचारिक क्रान्ति का सुधार–युग प्रारम्भ हुआ। (दूसरा) अति महान कार्य वैचारिक क्रान्ति को सदैव– सदैव के लिये प्रसारित व प्रचारित करने के लिये सत्य का प्रतिपादन करने वाले सूर्य रूपी आर्य समाज का गठन करके सदियों के लिये अदभुत प्रेरणादायक कार्य करके किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चिन्तन सत्यार्थ प्रकाश से :–

महर्षि लिखते हैं कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत–मतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्यान्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। (अनुभूमिका (1)।

मेरा मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना–लिखना और मानना सत्य कहता है, जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान अनेक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरूद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। (भूमिका से)

धार्मिक अन्धविश्वास व समाजिक कुरीतियो का प्रचलन कैसे हुआ :–

यह सिद्ध बात है कि पांच हजार वर्षों के पूर्व वेद मत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरूद्ध हैं। वेदों की अप्रवृक्ति होने के कारण महाभारत–युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृक्ति से अविधा अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। वेद विरूद्ध सर्वप्रथम चार मुख्य मत पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों व अन्धविश्वासों के मूल हैं। यह सब एक के पीछे दूसरा, तीसरा, चौथा चला है। (सत्यार्थ प्रकाश से)

महाभारत युद्ध में भारत की अपार हानि हुई, विशेष कर वैदिक धर्म के मार्गदर्शक विद्वानों का नाश हुआ और चतुर व स्वार्थी लोगों ने वेद विरूद्ध व ऋत–सत्य के विपरीत अपने–अपने मतों की श्रृंखला भारत में खड़ी कर दी और भारत की भोली–भाली जनता इनके जालों में फंसती चली गई। आपस में धार्मिक अन्धविश्वासों से सामाजिक कुरीतियों और जातिवाद, छुआछूत, मूर्तिपूजा व अन्य कुरीतियों के संस्कार भारत की जनता में गहरे पीढ़ी दर पीढ़ी बनते चले गये। परिणाम स्वरूप विदेशियों ने भारत को अपना गुलाम बना लिया। शोषणवृत्ति व अनेक कुरीतियां भारत में फैल गयीं। धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन आज भी नहीं हुआ है, जो भारत की जनता को चारों तरफ आग की लपटों की तपस की तरह गर्मी दे रही है। स्वतन्त्र भारत की जनता आज अन्धविश्वासों के गहरे परतन्त्र में जी रही है। वह विकट नासूर बन गया है।

असत्य का मडंन और सत्य के खंडन से हानियां :

आर्य समाज और वैदिक विद्वानों के अतिरिक्त सम्पूर्ण जगत में असत्य का समर्थन और परोक्ष व अपरोक्ष रूप से सत्य का खंडन होने से राष्ट्र की, परिवार की, व्यक्ति की, वैचारिक हत्या हो रही है, इसको केवल आर्य समाज का वैचारिक संगठन ही बचा सकता है।

आर्य समाज का मुख्य कार्य कुरीतियों के खण्डन विराम से समाज की हानियां :

हिन्दू महासभा के संस्थापक पं. मदनमोहन मालवीय ने कहा था कि 'यदि आर्यसमाज संगठन दौड़ता रहेगा तो हिन्दू समाज चलता रहेगा, यदि आर्य समाज मन्द गति से चलेगा तो हिन्दू समाज बैठ जायेगा, यदि आर्य समाज बैठ गया तो हिन्दू समाज सो जायेगा और यदि दुर्भाग्य से आर्य समाज सो गया तो हिन्दू समाज मर जायेगा।

आज आर्य समाज अपने मूल उद्देश्य से पीछे हट रहा है। उपदेशक, भजनोपदेशक व्यवसायी हो गये हैं। मिश्नरी पुरूषार्थ दिनों–दिन कम होता जा रहा है। जनता को स्वस्थ्य विचार जो मिलने चाहिए थे, वह नहीं मिल रहे हैं। मानव बचपन से लेकर मृत्यु तक उसी मान्यता में जीवन बिता देता है जिस मत या समुदाय में उसने जन्म लिया है। आर्य समाज अपने जन्मकाल से पचास वर्षों तक तो कुरीतियों का खुले रूप से खण्डन करता रहा और सत्य विचारों का मडंन करता रहा था, वर्तमान में यह ठीक है तरीका बदलना होगा परन्तु जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है सत्य को सदैव जनता के सामने रखना, फिर उसी शैली को अपनाना होगा। जनता सत्य ज्ञान की प्यासी है।

आर्य समाज को अब जागना ही होगा और बढ़ते अन्धविश्वासों से सबक लेना होगा :

महर्षि दयानन्द युग के सर्व श्रेष्ठ विद्वान थे। वो चाहते तो अन्यों की तरह कोई मत खड़ा कर देते और स्वयं महन्त बन जाते। पर मेरे दयानन्द ने अपना सुख नहीं देखा। उन्होंने भारत की जनता को अन्धविश्वासों से बचाने के संकल्प में स्वयं अनेक कष्ट सहे। उनको बार–बार ज़हर पिलाया गया, किन्तु वह हिमालय की तरह अडिग रहे। आज आर्य समाज के लाखों कार्यकर्ता व भारत की जनता उनकी ऋणी है। आज आर्य समाज भौतिकता में दिनों–दिन धंस रहा है। हम अपने असली उद्देश्य से भटक रहे हैं। कंकरीट के मन्दिर बनाकर इनमें सुख–सुविधाओं को लगा कर हम उन्नति समझ रहे हैं। आर्य समाज का गठन हुए आज 143 वर्ष हो गये हैं। अपने जन्मकाल के पश्चात् पचास वर्षों तक आर्य श्रेष्ठों ने आर्य समाज को संसार भर में फैलाया और जनता में अपना सन्देश बहुतायत से पहुँचाया था, किन्तु हम उस काल के पश्चात् पुराने आर्य समाज के योद्धाओं को ही स्मरण कर संतोष कर रहे हैं। एक प्रकार से उन्ही को भुना रहे हैं। युग की रफ्तार देखकर हम आर्यो को प्रचार–प्रसार व साहित्य में समयानुकूल परिवर्तन लाना होगा। आज आर्य समाज को आपस में सम्पत्ति विवाद, पद विवाद, अहंकार विवाद, गुट विवाद, नेतृत्व विवाद को परे धकेलकर, अपने असली उद्देश्य वेदों का प्रचार, सत्य सिद्धान्तों का मडंन और असत्य विचारों व कर्मो का खण्डन एक रूपता से करना पड़ेगा। आज आर्य समाज की स्थिति यह है कि हम अपने मंचों से भी अन्धविश्वास का खंडन करने से बचते हैं। आज आवश्यकता है कि वैदिक सिद्धान्तों की छोटी–छोटी पुस्तकें छपवाकर बांटें। जब हम आर्यसमाज का सैद्धान्तिक पक्ष जनता के सामने रखेंगे तो गलत मान्यताओं का खण्डन अपने आप ही हो जायेगा और कोई भी मत वाले हम पर आक्षेप नहीं कर सकेंगे।

मुझे लगभग पचास वर्ष हो गये हैं, वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते–करते, जिसमें मुझे भारी सफलता मिल रही हैं। मैं कथनी और करनी में एक रूपता रखता हूँ। मेरे इस लेख को गहराई से मनन कर विचार करेंगे तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

मै चाहता हूँ कि नई पीढ़ी को सत्य सिद्धान्तों का पता चले, किन्तु वह तो जिस मत में पले–बढ़े हैं उन्हीं को सत्य मानकर चल रहे हैं। मेरे 75 वर्षो के अनुभवों से जो सामने आया, मैं वही प्रतिपादित कर रहा हूँ।

विशेष :– माननीय पाठक **यह** जान लें कि प्रचलित धारणाओं को निराधार सिद्ध करने का साहस अनेक पीढ़ियों में कोई–कोई ही कर सकता है, जिनमें हम इस युग में महर्षि दयानन्द को पाते हैं। बाकी करोड़ो व्यक्ति तो लकीर के फकीर होते हैं।

वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास,
मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो. : 9411512019, 9557641800

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

विस्तृत जानकारी पृष्ठ- **१५**

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350

डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन

गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१

फोन : 05922—262033/09412139333

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, हरिद्वार

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार/ प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2019 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं–

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्यत: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं, जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2018 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें।

गिरधारी लाल चांदवानी
अध्यक्ष

प्रोफेसर महावीर अग्रवाल
मंत्री (9719004452)

काकोरी केस के अमर शहीद

वीरवर सेनानी

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

रामप्रसाद बिस्मिल

अशफाक उल्ला खां

ठा० रोशनसिंह

कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा शत-शत नमन

सर पर बांध कफन जो निकले, आजादी के दीवाने बन।
ऐसे अमर शहीदों का हम आओ आज करें शुचि वन्दन।।
नहीं किसी से कभी डरे जो, देशप्रेम से रहे भरे जो।
गोलों की बोछारों में भी सीना तान सदैव बढ़े जो।।
मातृभूमि के लिए जिये जो, मर कर भी महके बन चन्दन।।
ऐसे अमर शहीदों का हम आओ आज करें शुचि वन्दन।।
लिए तिरंगा चले झूमते, कभी न देखे गये ऊंघते।
हंस हंस कर फांसी के फंदे, होड़ लगाकर रहे चूमते।।
जिनका केवल एक स्वप्न था, तड़ तड़ टूटें मां के बन्धन।
ऐसे अमर शहीदों का हम आओ आज करें शुचि वन्दन।।
अमर हो गये फांसी पर चढ़, कभी न झिझके रहे सदा दृढ़।
भारत माता की जय जय कह, अन्यायों का तोड़ दिया गढ़।।
नया सवेरा ले आने को हुआ निछावर जिनका जीवन।
ऐसे अमर शहीदों का हम आओ आज करें शुचि वन्दन।।

सिख थे हिन्दू थे मुसलमान थे ईसाई थे।
पड़ गया वक्त वतन पर तो सगे भाई थे।।
देश के वास्ते तूफान उठाने वालो,
मौत की गोद में भी झूम के गाने वालो
सब को कुर्बान किया खुद हुए कुर्बाने वतन
तुमको हम शीश झुकाते हैं शहीदाने वतन

कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी, जन जन में उत्साह भरेगी।।
लेकर नव आलोक धरा पर संघर्षों की कथा कहेगी।।

प्रस्तुति- हरिश्चन्द्र आर्य

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

योग भगाए रोग — कैसे करें धनुरासन

इस आसन का नाम उसे अपनी धनुषी आकार की वजह से मिला है। धनुरासन, पद्म साधना की श्रेणी में से एक आसन है। इसे सही तौर पर धनु–आसन के नाम से जाना जाता है।

धनुरासन करने का तरीका– पेट के बल लेटकर, पैरो मे नितंब जितना फासला रखें और दोनों हाथ शरीर के दोनों ओर सीधे रखें।

घुटनों को मोड़ कर कमर के पास लाएँ और घुटिका को हाथों से पकड़ें। श्वास भरते हुए छाती को ज़मीन से उपर उठाएँ और पैरों को कमर की ओर खींचें। चेहरे पर मुस्कान रखते हुए सामने देखिए। श्वासोश्वास पर ध्यान रखे हुए, आसन में स्थिर रहें, अब आपका शरीर धनुष की तरह कसा हुआ हैस लम्बी गहरी श्वास लेते हुए, आसन में विश्राम करें। सावधानी बरतें आसन आपकी क्षमता के अनुसार ही करें, जरूरत से ज्यादा शरीर को ना कसें। १५–२० सैकन्ड बाद, श्वास छोड़ते हुए, पैर और छाती को धीरे धीरे ज़मीन पर वापस लाएँस घुटिका को छोड़ते हुए विश्राम करें।

धनुरासन के लाभ– पीठ/ रीढ़ की हड्डी और पेट के स्नायु को बल प्रदान करना। जननांग संतुलित रखना।

छाती, गर्दन और कंधौं की जकड़न दूर करना। हाथ और पेट के स्नायु को पुष्टि देना।

रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाना। तनाव और थकान से निजाद। मलावरोध तथा मासिक धर्म में सहजता। गुर्दे के कार्य में सुव्यवस्था।

विशेष– यदि आप को उच्च या निम्न रक्तदाब, हर्निया, कमर दर्द, सिर दर्द, माइग्रेन (सिर के अर्ध भाग में दर्द), गर्दन में चोट/क्षति, या हाल ही में पेट का ऑपरेशन हुआ हो, तो आप कृपया धनुरासन ना आजमाएँ। गर्भवती महिलाएँ धनुरासन का अभ्यास न करें।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने–समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सानिध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण नि:शुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मद्द दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-।।,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

ये है उदयपुर का नवलखा महल जहां महर्षि दयानन्द ने की सत्यार्थ प्रकाश की रचना

अर्जुन देव चड्डा के ७५ वसंत पूर्ण होने के उपलक्ष्य में १३ जनवरी को होगा

दिव्य अमृत महोत्सव

कोटा (राजस्थान)। आर्यसमाज के जिला प्रधान एवं आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक तथा आर्य नेता अर्जुन देव चड्डा जी के जीवन के 75 वसंत पूर्ण होने के उपलक्ष्य में परिजनों द्वारा 13 जनवरी रविवार को आर्यसमाज, विज्ञान नगर में दिव्य अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर विज्ञान नगर, कोटा में नवनिर्मित स्वनिवास-1-झ-2 में प्रातः 9 बजे गृह प्रवेश यज्ञ तथा अल्पाहार के पश्चात् पूर्वाह्न 11 बजे आयुष्काम यज्ञ (अमृत महोत्सव) तथा 12 बजे स्नेहभोज का आयोजन किया जा रहा है।

ज्ञातव्य है कि कोटा के जाने-माने आर्य नेता श्री चड्डा जी की गणना न केवल राजस्थान के वरिष्ठ तथा समर्पित समाजसेवियों में होती है वरन् सम्पूर्ण आर्य जगत में उनकी एक कर्मठ, उदारचेता, सहृदय, कुशल संगठक तथा प्रखर आर्य के रूप में खास पहचान है।

श्री चड्डा जी के अमृत महोत्सव के आयोजक उनके पुत्र- पुत्रवधू राकेश-पूनम चड्डा, मुकेश-गीता चड्डा और पुत्री-दामाद रचना-केलाश अदलक्खा तथा सभी परिजनों ने समाज के शिष्ट -विशिष्टजनों से उनकी गरिमामयी उपस्थिति की आकांक्षा व विनम्र प्रार्थना की है।

बांग्लादेश के प्रतिनिधियों ने कहा

बांग्लादेश में काफी सक्रिय है आर्य समाज

दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर बांग्लादेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के आचार्य कृष्णदेव शास्त्री के नेतृत्व में आर्यों का एक विशाल जत्था दिल्ली स्थित रोहिणी पार्क, दयानन्द नगर पहुंचा।

बांग्लादेश से पधारे आर्यसमाज के अध्यक्ष भैरव शास्त्री, मंत्री सुश्रत सत्यार्थी तथा मृंगमय आर्य, मृदुल आर्या, मृणाल आर्य के साथ तीन दर्जन से अधिक प्रमुख प्रतिनिधियों ने अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में भाग लियां

इस अवसर पर बांग्लादेश के आर्य विद्वान कृष्णदेव शास्त्री ने बताया कि बांग्लादेश में आर्य समाज के माध्यम से अनेक सामाजिक कार्य किये जाते हैं जिनमें लिहाफ वितरण करना, पर्यावरण चेतना हेतु पौधे लगाना, विभिन्न आर्य पर्वों पर हवन करने के साथ ही ग्राम-ग्राम में घूमकर यज्ञों का आयोजन किया जाना आदि प्रमुख है। मृगमय आर्य ने बताया कि बांग्लादेश में 25 गुरुकुल हैं, जिनमें से ज्यादातर गुरुकुलों में 1 से 10 तक की कक्षाएं संचालित होती हैं।

आर्य समाज के प्रधान भैरव शास्त्री के अनुसार बांग्लादेश में अनेक समस्याएं हैं, जिनमें आर्थिक कठिनाई मुख्य है। यहां आर्य समाज द्वारा वार्षिकोत्सवों एवं आर्य पर्वों पर आर्य साहित्य भी वितरित किया जाता है। उन्होंने बताया कि बांग्लादेश की सैकड़ों कन्याएं भारत के गुरुकुलों में ज्ञानार्जन कर रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत की ओर से बांग्लादेश में वैदिक विद्वानों को भेजने की विशेष आवश्यकता है ताकि वहां का जनमानस वैदिक संस्कृति को समझ सके।

आगामी कार्यक्रम

- ♦ 4 से 6 जनवरी, 2019- आर्यसमाज, अंजलि विहार, कोटा (राजस्थान) में वार्षिकोत्सव।
- ♦ 4 से 6 जनवरी, 2019- आर्यसमाज, अमर गोजिया, एटा में वार्षिकोत्सव।
- ♦ 4 से 6 जनवरी, 2019- एन.पी.ई.जी. फेज्-II, (स्टाफ क्वाटर) नोएडा, गौतमबुद्धनगर में वेद पारायण यज्ञ।
- ♦ 14 जनवरी, 2019- गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल, मेरठ में मकर संक्रांति पर्व।
- ♦ 25 से 27 जनवरी, 2019- आर्यसमाज, इन्दिरानगर, बैग्लुरू में वार्षिकोत्सव।
- ♦ 3 से 5 फरवरी, 2019- आर्यसमाज, धाता, जिला फतेहपुर में वार्षिकोत्सव।
- ♦ 1 से 3 मार्च, 2019- आर्यसमाज, पाणिनी नगर, जोधपुर में वार्षिकोत्सव।
- ♦ 22 से 24 मार्च, 2019- सलीमाबाद (गाजियाबाद) जन्मस्थली ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त।
- ♦ 29 से 31 मार्च, 2019- आर्ष गुरुकुल, दयानन्द वाणी, जि0- मधुबनी वार्षिकोत्सव।

डॉ. पवित्रा सम्मानित

भुवनेश्वर (उड़ीसा)। आर्यसमाज द्वारा आर्ष कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) उ.प्र. की अधिष्ठात्री डॉ. पवित्रा का 24 दिसम्बर को शन्नो देवी वेद विदुषी पुरस्कार एवं रुपये 15000/- की मानद राशि प्रदान कर सम्मान किया गया। आर्यावर्त केसरी की ओर से बधाई।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। 16 दिसम्बर को गुरुकुल गौतमनगर का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश-विदेश से श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

प्रथम पृष्ठ का शेष : उदयपुर में.....

ऋषिऋण से उऋण हो सकते हैं। वैदिक विद्वान डॉ0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के समारोह की अध्यक्षता मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट चक्रकीर्ति सामवेदी (जयपुर) ने की व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू करने की है। इससे वर्ग विशेष की बढ़ती विस्फोटक जनसंख्या देश में एक नये पाकिस्तान की ओर कदम बढ़ा रही है, जिसके आने वाले समय में गम्भीर परिणाम होंगे। श्री आर्य ने युवाओं को आर्य समाज के साथ जोड़ने पर बल दिया।

समारोह में स्वामी आर्यवेश ने कहा कि पाखण्ड और अंधविश्वास फैलाने का कार्य यह टी0वी0 चैनल और तथाकथित धर्मगुरू कर रहे हैं। हमें इनके पोलखाते खोलने के लिए आम जनता के बीच जाकर कार्य करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, शिक्षाविद् डॉ0 परमेन्द्र कुमार दशोरा, बहिन पुष्पा शास्त्री (रेवाड़ी), आचार्य देव शर्मा (दिल्ली), भजनोपदेशक केशवदेव शर्मा, डॉ0 उमाशंकर शर्मा (कोटा), प्रि0 एमएल गोयल (जयपुर), लोकेश द्विवेदी (उपमहापौर, उदयपुर), मोतीलाल आर्य, सुरेशचन्द मित्तल, संजय शांडिल्य, ओमप्रकाश वर्मा, डॉ0 अमृतलाल तापड़िया आदि ने अपने विचार रखे व कार्यक्रम को सफल बनाया। जयपुर से पधारी आर्य विदुषी बहन सरोज वर्मा का अभिनन्दन किया गया। न्यास के कार्यकारी प्रधान अशोक आर्य ने दूर-दराज से पधारे सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ चार पर देखें।

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा स्थापित सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में सहयोग देकर

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद